मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

धन की बीमारी

"हमारे देश पर धन की उगाही करने का ऐसा भूत सवार हो गया है जिसने देश के हालात और अर्थव्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर दिया है। हर व्यक्ति इस सोच में डूबा है कि वह कैसे रातो–रात अमीर बन जाए?धन कमाना बुरी बात नहीं किन्तु जल्दी से जल्दी धनवान बन जाने और हथेली पर सरसों उगाने का शौक़ विनाशकारी है। यह शौक़ एक लावे की भांति बह चला है और एक ज्वालामुखी की भांति फट चुका है। शहर, क़स्बे, देहात सब इस बीमारी का शिकार हैं। धन के एकत्रीकरण का यह जुनून देखकर कई बार कुछ ऐसा प्रतीत होने लगता है कि इस देश में हर चीज़ दम तोड़ चुकी है। केवल दो चीज़ें जीवित हैं, एक आपस में नफ़रत और दूसरे अधिक से अधिक धन कमाने की लालसा, वास्तविकता यही दो हैं और बाक़ी सबकुछ सिद्धान्त व काव्य अथवा शायरी है।

समाज में व्यवहारिक बुराईयां हर दौर में रही हैं किन्तु धन की हवस इस प्रकार सवार हो जाना कि व्यक्तिगत हित के लिए राष्ट्रहित की ज़रा भी चिन्ता न हो, यह कितनी चिन्ता की बात है!!"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

MAY 16

₹ 10/-

मनमानी स्वयं में एक धर्म है

"मनमानी अब एक धर्म के रूप में परिवर्तित हो चुकी है, नहीं! बल्कि इसका यह रूप सदैव रहा है और इस धर्म के मानने वालों की संख्यां सबसे अधिक रहती है। धर्मों की सूची में इसका नाम किसी धर्म के रूप में नही बतलाया जाता और न इस नाम से किसी धर्म के मानने वालों की संख्यां ज्ञात की जाती है। किन्तु यह एक वास्तविकता है कि यह दुनिया का सबसे बड़ा धर्म है और इसके मानने वाले सबसे अधिक संख्यां में पाए जाते हैं। आपके सामने विभिन्न धर्मों के मानने वालों के आंकड़े आते हैं कि ईसाई धर्म को मानने वाले इतने, इस्लाम के मानने वाले इतने लेकिन इनमें से हर एक में एक बड़ी संख्यां जो कहलाती तो हैं धर्म से ईसाई, हिन्दू, मुसलमान लेकिन वास्तव में उसी मनमाने धर्म के मानने वाले हैं।

ऐच्छिक जीवन व्यतीत करने का रिवाज और इस धर्म की प्रसिद्धि केवल इस कारण से है कि आदमी को इसमें बहुत मज़ा आता है। माना की ऐच्छिक जीवन बड़े मज़े का जीवन है और आनन्दित होने की इच्छा हर मनुष्य की होती है, लेकिन यदि संसार के सभी मनुष्यों को सामने रखकर सोचा जाए तो फिर इस प्रकार का जीवन दुनिया के लिए एक लानत है और उसकी सारी मुसीबतें और सारे दुख इसी इच्छाओं की पैरवी के कारण हैं और दुनिया की सारी तबाहियां और सभी प्रकार के अन्याय की ज़िम्मेदारी उन्हीं लोगों पर आती है जो इस मनहूस धर्म का अनुसरण करने वाले हैं।

दुनिया में इस धर्म की संभावना केवल इस रूप में हो सकती है कि पूरी दुनिया में केवल एक मनुष्य का अस्तित्व हो। इसी स्थिति में वह अपनी इच्छाओं की मनमाने ढ़ंग से पूर्ति करने का अधिकारी हो सकता है। लेकिन स्थिति ऐसी नहीं है। इस दुनिया के पैदा करने वाले ने इसमें करोड़ों, अरबों मनुष्यों को बसाया है और उनमें से हर एक के साथ इच्छा एंव आवश्यकता जुड़ी हुई है। ऐसी स्थिति में जो भी मनुष्य मनमाना जीवन व्यतीत करने का प्रयास करता है मानो वह इस स्थिति से आंख बन्द करता है कि उसके साथ उसी की तरह के और मनुष्य भी रहते हैं, लेकिन आंख बन्द करने से परिस्थितियां बदल नहीं जाती हैं। वे अपनी जगह पर बनी रहती हैं। इसलिए कुछ लोगों की मनमानी का परिणाम न चाहते हुए भी दूसरों की मुश्किलों और मुसीबतों की शक्ल में निकलेगा।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:७ मई २०१६ ई० वर्ष:८

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मौ० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मौ० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

संकट के बादल.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अत्याचारियों का परिणाम.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

कुरआन के चमत्कार.....४
मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

बन्दगी की पराकाष्ठा.....६
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नमाज़ की मकरूहात.....९
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्लामी पहनावा.....१४
अब्दुस्सुब्हान नाखुदा नदवी

असहिष्णुता एवं नफ़रत की राजनीति को बढ़ावा..१५
मौलना अज़ीज़ुल हसन सिद्दीक़ी

जर्मनी में मुस्लिम शरणार्थी.....१६

ग़ीबत की बीमारी.....१७
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

इसलामोफ़ोबिया.....१८
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

संकट के बादल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

देश को आज़ाद हुए अभी सत्तर साल भी पूरे नहीं हुए कि इस पर संकट के बादल मंडलाने लगे। इसका आरम्भ तो उसी समय हो गया था जब मानवता की बैरी क़ौमो व राष्ट्रों से यहां के शासकों ने मित्रता के हाथ बढ़ाने आरम्भ कर दिये थे। यहूदियों का मानवता के विरुद्ध षड़यन्त्र खुला हुआ है। उनके प्रोटोकॉल में सब कुछ मौजूद है जो आंखे खोलने के लिए पर्याप्त है। "सोने पर सुहागा" यह कि अब अमरीका की सेनाएं हमारे देश की कमाल संभालेंगी। जिस राष्ट्र ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम से आकर इस देश पर क़ब्ज़ा किया। यहां के ख़ज़ानों को लूटा, यहां की जातियों को आपस में लड़ाया, और हमारी सरकार कि आज वे सैन्य शक्ति को मज़बूत करने के बहाने आकर क्या–क्या योजनाएं रखते हैं। इसको हर वह व्यक्ति समझ सकता है जो उत्थान व पतन की कहानियों से परिचित हो। आगे क्या होने वाला है इसको तो आने वाला समय ही बताएगा, किन्तु इतना बड़ा लोकतान्त्रिक देश जिसके पास एक बड़ी सैन्य शक्ति है उसको क्या आवश्यकता है कि वह किसी का अधीन बने।

अमरीका जो इस समय दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त है। आर्थिक व पूंजीवादी रूप से इसके हालात अन्दर ही अन्दर खोखले हैं। वह अपनी आर्थिक सदृढ़ता के लिए दुनिया के विभिन्न देशों को खिलौना बना रहा है। कैप्टलिज़्म (पूंजीवाद) का यही नियम रहा है कि हर ताक़त वाला अपनी ताक़त को बढ़ाने के लिए या उसको बचाने के लिए कमज़ोरों का ख़ून चूसता है। उसको न किसी से हमदर्दी होती है और न उसकी आंखों में मानवता हेतु पानी होता है। इसका काम मनुष्यों के बीच राजनीति करना होता है। दिखावे के लिए आचार–व्यवहार व मानवता का डंका पीटने वाले, मानवाधिकारों का बार–बार हवाला देने वाले वे हैं जिनके दिल इनसानों के नहीं बल्कि भेडियों के हैं। किसी दोस्त ने बताया कि जब वह लन्दन के एयरपोर्ट पर उतरा तो वहां उनके किसी मित्र ने दिखाया कि वहां एक भेड़िये की मूर्ति बनी हुई थी। उसकी ओर उन्होंने इशारा करके कहा कि यह यहां की सभ्यता है और यह तस्वीर यहां के स्वभाव का वर्णन कर रही है। दूसरों को धोखा देकर आगे बढ़ जाना और उनको कंगाल करके अपना पेट भरना उन लोगो का तरीक़ा है।

अफ़सोस की बात यह है कि हमारा देश जो अपने अन्दर व्यवहारिक मूल्य रखता था और दुनिया को उसने दर्द व मुहब्बत का संदेश दिया था, आज वह ऐसे दरिन्दों के सामने हाथ फैला रहा है जो रहम खाना नहीं चाहते और ऊपर से हमदर्दी का इज़हार करने वाले भेड़ियों का दिल रखते हैं और मौक़े की तलाश में रहते हैं। अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों के इस तरीक़ों का वर्णन कुरआन मजीद में यहूदियों के चर्चे में किया:

"और किताब वालों में बहुत से वे हैं कि आप अगर उनके पास माल का ढ़ेर अमानत रखा दें तो वे आप तक उसको पहुंचा देंगे और बहुत से वे हैं कि अगर आप एक दीनार भी उनके पास अमानत के तौर पर रखा दे तो वे आप तक इसको पहुंचाने वाले नहीं सिवाए इसके कि आप उनके सर पर ही खड़े रहें, यह इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि अनपढ़ लोगों के बारे में हमारी कोई पकड़ नहीं होगी और वे अल्लाह पर जानते बूझते झूठ बोलते हैं।"

(सूरह आले इमरान: 75)

बात–बात पर "थैंक यू" और "आइ एम सॉरी" कहने वालो का हाल यह है कि यदि अवसर प्राप्त हो तो पूरे के पूरे देश को हज़म कर जाएं और शायद डकार भी न लें। चीते से हिरन की दोस्ती क्या है? जब चीते को मौक़ा मिलेगा वह हिरन को साफ़ कर जाएगा। हमारे देश को शासकों को होश से काम लेना चाहिए ताकि यह देश दोबारा ग़ुलामी के शिकंजे में न चला जाए और आज़ादी के मतवालों ने जो क़ुर्बानियां दी थीं वह सब कहीं ख़तरे में न पड़ जाएं।

अत्याचारियों का परिणाम

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अलकुरआनः "और ज़ालिम जो कर रहे हैं उससे अल्लाह को हरगिज़ भी बेख़बर न समझना वह तो उनको उस दिन तक छूट दे रहा है जिसमें उनकी आंखे पथरा जाएंगी। अपने सरों को उठाए दौड़ते होंगे पलक भी न झपका सकेंगे और उनके दिल हवा–रवा होंगे। और उस दिन से लोगों को डराइए जब अज़ाब उन पर आ पहुंचेगा तो नाइंसाफ़िया करने वाले कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी सी मुद्दत के लिए हमें और छूट दे दे हम तेरी बात मान लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने इससे पहले क़समें खा–खा कर यह नहीं कहा था कि तुम्हारा पतन तो हो ही नहीं सकता। और तुम उन लोगो की बस्तियों में रहते थे जो अपने साथ ज़ुल्म कर चुके थे और तुम्हारे सामने खुलकर आ चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया और हमने तुम्हारे सामने मिसालें भी दी थीं। और उन्होंने अपनी चालें चलीं और उनकी चालें तो अल्लाह ही के क़ब्ज़े में हैं जबकि उनकी कुछ चालें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी अपनी जगह से हिल जाएं। तो अल्लाह के बारे में हरगिज़ यह न सोचना कि वह अपने रसूलों से वादा ख़िलाफ़ी करने वाला है। निस्संदेह अल्लाह ज़बरदस्त है बदला लेने वाला है।"

(सूरह इब्राहीमः 42–44)

हिजरत से पहले मक्का मुकर्रमा में मुसलमानों ने तेरह साल का जीवन बहुत की कष्ट व पीड़ा में बिताया। मक्का के मुश्रिक उनको बांध कर रेगिस्तान की गरम धूप में घसीटते, पत्थर से दबा देते, गन्दगियां डालते, वे सारे प्रयास करते जिनसे इनसान को मौत आ जाए किन्तु उन सभी तकलीफ़ों को मुसलमान बर्दाश्त करते रहे। यहां तक कि जब अत्याचार अपनी चरम सीमा को पहुंच गया तो कुछ सहाबा किराम (रज़ि0) ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0)! हम कहां तक यह तकलीफ़ बर्दाश्त करें। वह समय कब आएगा जब अल्लाह की मदद आयेगी? आप (स0अ0) ने उत्तर दियाः तुमसे पहले ईमान वालो ने इससे अधिक कष्ट व पीड़ा झेला है, अभी तुम भी बर्दाश्त करो, अल्लाह की मदद अवश्य आयेगी, और तुम्हें कामयाबी मिलेगी। अतः एक समय आया कि हिजरत (पलायन) का आदेश दिया गया और सभी मुसलमाना मदीना मुनव्वरा जाने लगे। जहां उनको शक्ति प्राप्त हुई और उनके प्राण भी सुरक्षित हो गये।

उपरोक्त आयतों इसी की ओर इशारा करते हुए कहा गया है कि ऐसा नही है कि अल्लाह तआला बेख़बर है अपितु वास्तवकिता यह है कि अल्लाह तआला उन ज़ालिमों को नज़रअन्दाज़ कर रहा है। उनको सज़ा देने का समय बढ़ा रहा है। जब सज़ा का समय आएगा तो वह दिन बहुत कठिन दिन होगा। उस दिन एक ऐसी बेचैनी व अधीरता होगी कि ज़मीन फट जाएगी, पहाड कण–कण हो जाएंगे और धूल की तरह उड़ने लगेंगे अर्थात ऐसी तबाही होगी कि किसी भी व्यक्ति को कुछ समझ में नहीं आएगा और उसकी आंखे फटी की फटी रह जाएगीं। वह अत्यधिक घबराहट व परेशानी में होगा। अपने सर को झुकाए हुए, निगाह जमाए इस प्रकार देख रहा होगा कि उसकी निगाहनहीं झपकेगी। जैसा कि मनुष्य किसी बड़े ख़तरे को देखते समय उनकी ओर देखता ही रह जाता है। इसी प्रकार क़यामत के दिन भी अत्याचारियों का यही अन्जाम होगा कि वे कहीं खड़े नहीं हो सकेंगे, उनकी आंखे फटी जा रही होंगी, उनको कोई सहारा देने वाला न होगा, उनके दिल उड़े जा रहे होंगे। मानो जब उनकी यह हालत होगी तो उस दिन उन्हें अपने कर्मों का फल भुगतना होगा। क्योंकि अल्लाह तआला उनकी सभी हरकतों से अच्छी तरह परिचित है। उसके यहां एक–एक चीज़ दर्ज है। जो उन्होंने नबियों को, ईमान वालों को परेशान किया और अपने ऐश व अय्याशी के जीवन में मस्त रहे।

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में अपने नबी के द्वारा भांति–भांति के जीवन में मस्त रहने वालों को यह संदेश देता है कि वे उस ख़तरनाक दिन से डरें। .....(शेष पेज 8 पर)

कुरआन के चमत्कार

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

कुरआन मजीद को स्वयं कुरआन मजीद में विभिन्न नामों से याद किया गया है। कभी इसको फ़ुरक़ान कहा गया है, कभी ज़िक्र कहा गया है, इसके अतिरिक्त इसके अन्दर शिफ़ा (उपचार) भी है और हर समस्या का समाधान भी। कुरआन मजीद अल्लाह की एक ऐसी किताब है जिसका मुक़ाबला किसी और किताब से न पहले किया जा सकता था न आगे किया जा सकेगा। वे सभी किताबें जो आसमानी थीं, उनकी तुलना में कुरआन मजीद को एक गुना श्रेष्ठता इस तौर पर प्राप्त है कि वह सभी किताबों का संग्रह है। क्योंकि जो कुछ उनमें था वह सब कुरआन मजीद के अन्दर आ गया है। इसलिए कि जितनी किताबें आसमानी हैं वे आसमानी और ख़ुदाई किताबें तो हैं, उन पर ईमान लाना आवश्यक है लेकिन इस समय वास्तविकता यह है कि वे सब आसमानी किताबें थीं जो कि अब सुरक्षित नहीं हैं और अपनी अस्ल स्थिति में शेष नहीं हैं। क्योंकि उनके अन्दर परिवर्तन किया जा चुका है। हर एक में घटा–बढ़ा दिया गया है और उसका एक कारण यह है कि अल्लाह तआला ने उन किताबों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी मनुष्यों को दी थी और कुरआन की सुरक्षा स्वयं अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ली है। इसलिए न कोई इसको मिटा सका है न मिटा सकेगा, न बढ़ा सका है न बढ़ा सकेगा, न घटा सका है न घटा सकेगा, कुरआन मजीद को अल्लाह तआला ने मुसलमान उम्मत के लिए विशेषतयः और साधारणतयः पूरी मानवता के लिए अमृत बनाया है। जो भी इसे पियेगा वह जी उठेगा, और जो इसे छोड़ेगा इसका सम्मान नहीं करेगा वह ऐसे पतन व ज़िल्लत में पड़ जाएगा जिससे वह उठ नहीं सकेगा। इसीलिए हदीस में है कि: "कुरआन मजीद के द्वारा अल्लाह कुछ को उठा देता है और कुछ को गिरा देता है, मानो इसके अन्दर दोनों बातें पूरी तरह पायी जाती हैं।"

कुरआन मजीद की हक़ीक़त का समझना हमारे–आपके बस में नहीं है। इसी वजह से अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (स0अ0) के द्वारा हमको किताब दी और आप (स0अ0) का कथन है कि इसके चमत्कार कभी समाप्त नहीं होंगे। इसीलिए कुरआन मजीद के अन्दर नये–नये फूल और नये–नये फल सदा लगते रहते हैं। हर सदी में, हर अवसर पर, हर प्रकार के ज्ञान के जानने वाले के लिए इसके अन्दर मार्गदर्शन है और यह भी अल्लाह तआला का बहुत बड़ा करम है कि उसने हमको कुरआन पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायी और हमारे लिए इसको आसान भी कर दिया। हज़रत मौलाना अली मियां रह0 कहते थे कि कुरआन मजीद के अन्दर करन्ट बिजली के करन्ट की तरह है, जो तार के अन्दर दौड़ता रहता है और ऊपर से हम लोग इस तार को छू लेते हैं लेकिन अन्दर उंगली नहीं डाल सकते, क्योंकि यदि नंगे तार को हाथ लगा देंगे, तो हम जल जाएंगे। ऐसे ही कुरआन मजीद के अन्दर भी करण्ट है और ऐसा कि उससे बड़े–बड़े कारख़ाने चल जाते हैं। उसकी हार्ड लाइने होती हैं कि यदि उनके क़रीब कोई आ जाए तो उसी से चिपक जाए इसीलिए इसको दूर रखा जाता है ताकि इसके क़रीब कोई आदमी न जाए। पता चला कि यह तो दुनिया के करन्ट का हाल है तो अल्लाह के करन्ट की ताक़त क्या होगी?इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। लेकिन क्योंकि हमको अल्लाह तआला ने किताब दी है तो कुछ अन्दाज़ा भी करा दिया है कि यदि उसके द्वारा कोई करन्ट पाना चाहे तो वह ऐसा कर सकता है। लेकिन उसको उसी तरीक़े से लेना पड़ेगा जैसे इस दुनिया के करन्ट को लेने के लिए सीखना पड़ता है यानि उसके अलग–अलग तार होते हैं उसको सीखना पड़ता है, फिर उनको ढ़ंग से जोड़ा जाता है, तब लोग उस करन्ट से फ़ायदा उठाते हैं। जैसे जब लाउडस्पीकर के करन्ट को जोड़ा जाता है तब उसकी आवाज़ कई गुना बढ़ जाती है, लेकिन यहां यह करन्ट तार के अन्दर है जिसको ऊपर से हम छू रहे हैं, इसलिए इस करन्ट का हमको पता नहीं चलता, क्योंकि मैकेनिक ने इसको इस तौर पर जोड़ा है कि करन्ट अन्दर आ रहा है कि लेकिन अगर कोई अनाड़ी उसके अन्दर के करन्ट को छुएगा तो वह दूर करेगा, ऐसे ही कुरआन मजीद का मामला है कि उसके अन्दर करन्ट तो है लेकिन उसको जोड़ने के लिए अलग–अलग जगह लाइन बिछाने के लिए बहुत बड़ा माहिर इनसान होना चाहिए यद्यपि यह काम आसान इस तरह कर दिया गया है कि तिलावत अल्लाह ने सबके लिए रख दी है कि वह करो। इसमें कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन यह सीमित पैमाना है और यदि अब आप बड़े कारखाने चलाना चाहते हैं तो उतना ही

करन्ट भी उपलब्ध कराना पड़ेगा अर्थात कुरआन मजीद से संबंध भी उतना ही मज़बूत रखना होगा। और जो व्यक्ति कुरआन के करन्ट से जुड़ जाता है तो उसकी आंखें व ज़बान स्वयं कुरआन हो जाते हैं इसीलिए ऐसे व्यक्ति को "अर्रजुलल कुरआनी" कहा जाता है।

हज़रत आयशा रज़ि0 से जब पूछा गया कि रसूलुल्लाह (स0अ0) के अख़लाक़ (स्वभाव) क्या थे? तो बतायाः उनके स्वभाव व चरित्र का दर्पण कुरआन मजीद है। अर्थात रसूलुल्लाह (स0अ0) सम्पूर्ण कुरआन थे। यानि कुरआन को देखना हो तो रसूलुल्लाह (स0अ0) को देख लो। अब यदि कोई कुरआन मजीद की तिलावत अर्थ को समझकर कर रहा है और रसूलुल्लाह (स0अ0) से संबंध भी उसका मज़बूत है तो उसके अन्दर वही हाई पावर करन्ट आना शुरू हो जाता है। लेकिन उसके अन्दर भी अपने–अपने शौक़ की बात है कि वह कितना बड़ा है। जैसे आजकल फ़्रिज छोटा भी होता है और बड़ा भी होता है। एसी छोटा भी होता है और बड़ा भी होता है। यह अपने–अपने शौक़ की बात है। यदि छोटा है तो कम करन्ट होगा और बड़ा है तो ज़्यादा करन्ट होगा। कहने का अर्थ यह कि स्वयं में उसमें बहुत शक्ति है जबसे यह अवतरित हुआ है और जब तक दुनिया रहेगी इसकी ताक़त हमेशा बाक़ी रहेगी और जितने योग्यता वाले पैदा होते रहेंगे यह सबके लिए पर्याप्त होगा। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि शुरू के दौर वाले फ़ायदा उठाए और बाद के दौर वाले फ़ायदा न उठा पाएं। बल्कि यह इसी प्रकार हमेशा फ़ायदा पहुंचाता रहेगा। इसकी लाइन इसी प्रकार दौड़ रही है, करन्ट वैसे ही दौड़ रहा है लेकिन हम ख़ुद लेने वाले नहीं हैं, सीखने वाले नहीं हैं, इसलिए करन्ट नहीं आता। वरना अल्लाह जिस तरह हयि व क़य्यूम है उसकी दी हुई सारी चीज़ें भी उसी प्रकार क़ायम व दायम हैं। यहां तक कि कुरआन की बरकत का यह आलम है कि वह जिस ज़बान में नाज़िल हुआ है वह भी आज तक बाक़ी है। जबकि उससे पुरानी और बाद की सारी ज़बाने मिट गयीं। लेकिन अरबी ज़बान कुरआन की वजह से आज तक बाक़ी है और क़यामत तक बाक़ी रहेगी। यानि कुरआन ने अरबी को इतना ऊंचा कर दिया है कि अब वह मिटने वाली ज़बान न रही। हालांकि अरबी ज़बान को मिटाने की बहुत कोशिशें की जा चुकी हैं, यूं भी कोई भाषा चौदह सौ साल की उम्र नहीं रखती है लेकिन उर्दू को यह सम्मान प्राप्त है और वह आज भी जवान है और इसके अलावा जितनी ज़बाने हैं उनकी उम्रें बहुत कम है और वे बुढ़ापे को पहुंच चुकी हैं और उनमें से बहुत सी ज़बाने अपने बुढ़ापे को पहुंच कर पनाह की घाट पर हैं। उनका कोई जानने वाला नहीं है। संस्कृत भाषा, हिब्रानी भाषा यह सब समाप्त हो चुकी हैं। लेकिन अरबी ज़बान कुरआन व हदीस की वजह से हमेशा नयी है और आज भी बाक़ी है। पता चला कि कुरआन मजीद मामूली चीज़ नहीं है लेकिन क्योंकि इसको जैसा समझना चाहिए था, केवल इस हद तक समझा कि यह अल्लाह की किताब है। हालांकि केवल इसी शब्द को दिल की गहराई से कह दिया जाए तो भी बात बन जाए, क्योंकि जिस तरह हममें और अल्लाह में अन्तर है वही हमारी लिखी हुई किताबों और अल्लाह की किताब में अन्तर है। अर्थात इसकी तुलना में हमारी किताबों की कोई हैसियत ही नहीं। लेकिन अल्लाह की किताब की हैसियत है।

कुरआन मजीद हर प्रकार से अनोखा, अलबेला व निराला है। इसका कोई शरीक व बराबर का नहीं है। कोई भी जिस प्रकार से चाहे देख सकता है। और जहां तक कुरआन मजीद पढ़ने का संबंध है तो दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जो आसानी से पढ़ी जा सकती हो, बल्कि सारी दुनिया के लोग अलग–अलग ज़बानो के बोलने वाले, अंग्रेज़ी बोलने वाले, बंगाली बोलने वाले, जर्मन बोलने वाले कुरआन ऐसा पढ़ते हैं कि मालूम होता है कि मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा में परवान चढ़े हैं और अरबी ज़बान के माहिर हैं। लेकिन वही लोग यदि अरबी ज़बान बोलना चाहें तो उनको कुछ नहीं आता, पता चला कि यह कुरआन ही का चमत्कार है कि उसको हर ज़बान का माहिर पढ़ सकता है। इसीलिए दुनिया की कोई किताब ऐसी नहीं है जिसको पढ़ने वाले इतनी आसानी से पढ़ते हों, बल्कि मुश्किल से स्वयं उसके बोलने वाले पढ़ पाते हैं। जबकि दूसरी ज़बान की किताब इतनी आसानी से कोई पढ़ ले, यह भी इसका चमत्कार है कि कुरआन इतनी तेज़ पढ़ लिया जाता है कि दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जो इतनी तेज़ी से पढ़ी जा सके फिर उसके बाद यह भी उसका चमत्कार है कि दुनिया में कुरआन मजीद के हाफ़िज़ एक नहीं सैंकड़ों, हज़ारों लाखों बल्कि करोड़ों की संख्यां तक पहुंच रहे हैं। हालांकि इसके मुक़ाबले दुनिया की कोई ऐसी किताब नहीं है जिसके याद करने वाले हों।

बन्दगी की पराकाष्ठा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नबियों की जिन विशेषताओं का वर्णन कुरआन मजीद में मिलता है उनमें बन्दगी भी है। अधिकतर नबियों के साथ अब्द अर्थात बन्दा होने की विशेषता का वर्णन मौजूद है। लेकिन बन्दगी की जिस पराकाष्ठा का वर्णन रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ आया है वह और कहीं नहीं मिलता। यूं तो बहुत सी आयतों में रसूलुल्लाह (स0अ0) का वर्णन "अब्द" अर्थात बन्दे के शब्द से किया गया है और अल्लाह ने उसका संबंध अपनी ज़ात की ओर जोड़ा है। निम्न में वे आयतें वर्णित की जाती हैं:

"और यदि तुम उस चीज़ के बारे में ज़रा भी शक में हो तो जिसको हमने अपने बन्दे पर उतारा है तो उस जैसी एक सूरह ही बना लाओ और अल्लाह के अलावा अपने सभी मददगारों को बुला लाओ यदि तुम सच्चे हो।"

(सूरह बक़रहः 23)

"अस्ल तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें कोई पेचीदगी नहीं रखी।"

(सूरह कहफ़: 1)

"वह ज़ात बड़ी बरकत वाली है जिसने अपने बन्दे पर फ़ैसला (की किताब) उतारी ताकि वह दुनिया जहान को ख़बरदार करने वाला हो।" (सूरह फ़ुरक़ानः 1)

"और यह कि जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होकर उसको पुकारता है तो वे उस पर ठहाके पर ठहाके लगा लेते हैं।" (सूरह जिन्नः 19)

लेकिन उन सभी आयतों में एक आयत वह है जो रसूलुल्लाह (स0अ0) की बन्दगी की पराकाष्ठा की ओर इशारा करती है। पूरे कुरआन मजीद में जहां–जहां रसूलुल्लाह (स0अ0) का वर्णन है, उनमें मेराज के मक़ाम से बढ़कर कौन सी आयत होगी, जिसमें अल्लाह तआला ने अपने प्रिय व महबूब का वर्णन इस शान के साथ किया हो जिसको सूरह नज्म में दर्शाया गया है।

मेराज की घटना का वर्णन कुरआन मजीद में भी है और हदीसों में भी इसका वर्णन मिलता है। यह रसूलुल्लाह (स0अ0) की महानता व श्रेष्ठता के उन स्थानों में से है जिसमें कोई रसूलुल्लाह (स0अ0) का साझी नहीं और यदि उसका परिदृष्य भी सामने रखा जाए तो अन्दाज़ा होता है कि यह अल्लाह की ओर से आप (स0अ0) के लिए अत्यधिक मान व सुकून था।

रसूलुल्लाह (स0अ0) दावत के काम में व्यस्त हैं। हर ओर से हमला हो रहा है। हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) आपकी शुभचिन्तक हैं। जनाब अबूतालिब पीठ पर हाथ रखे हुए हैं कि एक के बाद एक दोनों इस संसार से एक ही साल में विदा ले लेते हैं। अब मक्का के मुश्रिकों के सामने ज़ाहिर में कोई रुकावट नहीं रही। रसूलुल्लाह (स0अ0) इसको महसूस कर रहे हैं। दिल सदमे से चूर है। कोई बात मानने वाला नहीं है। सिवाए कुछ ग़रीब मुसलमानों के। आप इस ख़्याल से ताएफ़ तश्रीफ़ ले जाते हैं कि शायद वहां बात बने और लोग इस दावत को क़ुबूल कर लें लेकिन वहां जिस तरीक़े से आप (स0अ0) को सताया गया वह अतिथि सत्कार करने वाले अरबों के इतिहास का एक काला अध्याय था। कोई नये आए हुए मेहमान को बिठाता, एक थका हुआ इनसान दूर से आया है, कोई हमदर्दी के बोल बोलता, इसके बजाए रसूलुल्लाह (स0अ0) पर पत्थर बरसाये जा रहे हैं, गालियां दी जा रही हैं, आप (स0अ0) के पैर लहूलुहान हैं, किसी तरह आपके सेवक आपको लेकर एक बाग़ के किनारे पहुंचते हैं, रसूलुल्लाह (स0अ0) की ज़बान पर उस समय यह दुआ जारी होती है जो रसूलुल्लाह (स0अ0) के टूटे हुए दिल की आवाज़ है और मदृभाषिता व गूढ़ता में दुनिया का एक नायाब मोती है। आप कहते हैं:

"इलाही! अपनी कमज़ोरी, लाचारगी और लोगों के तिरस्कार के कारण तेरे सामने फ़रियाद करता हूं तू सब रहम करने वालों में ज़्यादा रहम करने वाला है। दर्दमन्दों व पीड़ितों का मालिक तू ही है और मेरा मालिक भी तू ही है। मुझे किसके हवाले किया जाता है, क्या बेगाना तर व

शुरू के या उस दुश्मन के जो काम पर क़ाबू रखता है लेकिन जब मुझ पर तेरा ग़ज़ब नही तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं क्योंकि तेरी आफ़ियत मेरे लिए ज़्यादा वसीअ है। मैं तेरी ज़ात के नूर से पनाह चाहता हूं। जिससे सब अंधेरे रोशन हो जाते हैं और दीन व दुनिया के काम इससे ठीक हो जाते हैं कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी रज़ामन्दी मुझ पर उतरे। मुझे तेरी ही रज़ा व ख़ुशनूदी दरकार है और नेकी करने और बुराई से बचने की ताक़त मुझे तेरी ही तरफ़ से मिलती है।"

ऐसी हालत में जब आप वापिस मक्का जाते हैं तो एक रात आसमानों पर आपको बुलाया जाता है। जन्नत व दोज़ख़ की सैर करायी जाती है। नबियों से मुलाक़ातें होती हैं और सबसे बढ़कर अल्लाह तआला की वह निकटता प्राप्त होती है कि जिसका सोचा जाना भी मुश्किल है। इस समय रसूलुल्लाह (स0अ0) का वर्णन कुरआन मजीद में जिस शब्द के साथ होता है वह "अब्द" अर्थात बन्दा है। इरशाद होता है:

"पाक है वह ज़ात जो अपने बन्दे को मस्जिद–ए–हराम से मस्जिद–ए–अक़्सा ले गयी, जिसके आस–पास हमने बरकत रखी है ताकि हम उनको अपनी निशानियां दिखा दें, निसंदेह व खूब सुनता ख़ूब जानता है।" (अलइस्रा: 1)

अत्यन्त विशिष्ट अवसर पर बन्दे का वर्णन बन्दे के विशिष्ट होने का खुला हुआ प्रमाण है और यह रसूलुल्लाह (स0अ0) के जीवन का वह गुण है जो रसूलुल्लाह (स0अ0) के पूरे जीवन पर प्रकट होता है। वह मक्के मुकर्रमा की आर्थिक तंगी का दौर हो या मदीने मुनव्वरा की विजयों का, जब दुनिया के ख़ज़ाने आपके क़दमों में थे। लोग गिरोह दर गिरोह इस्लाम में दाख़िल होना शुरू हुए किन्तु जीवन के हर क्षण में रसूलुल्लाह (स0अ0) की बन्दगी की यह विशिष्टता हर पहलू से प्रकट होती है।

अल्लाह ने जो महानता व प्रियता आपको दी है व जिन्न व इनसान हो या फ़रिश्ते, हर प्राणी उसके आगे कम है। लेकिन स्वयं रसूलुल्लाह (स0अ0) अपने रब के आगे खड़े हैं। कदमों पर सूजन आ जाती है। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) कहती हैं कि आप इतनी तकलीफ़ क्यों उठाते हैं? अल्लाह तआला ने तो आपको अगले–पिछले सब गुनाह माफ़ कर दिये हैं, तो रसूलुल्लाह (स0अ0) कहते हैं: "क्या मैं अपने रब का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं।"

एक व्यक्ति रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास आता है और वह कांप रहा होता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) कहते हैं कि तुम डरते क्यों हो? मैं तो एक ऐसी औरत का बेटा हूं जो सूखे गोश्त के टुकड़ों पर गुज़ारा कर लेती थी।

(इब्ने माजा: 3437)

एक मामूली बांदी भी रसूलुल्लाह (स0अ0) सलाह मश्वरा कर रही है और आप उसकी बात सुन रहे हैं और कहीं से ऐसा नहीं लगता कि उन्हें बुरा लग रहा हो। यह बन्दगी की पराकाष्ठा ही तो है कि लोगों के पीछे चलना आप (स0अ0) को पसंद नहीं, सामने हाथ बांध कर खड़े होना नापसंद है, मजलिस में भी कोई श्रेष्ठ जगह स्वीकार नहीं कोई रसूलुल्लाह (स0अ0) से हाथ मिलाता है तो उस समय आप अपना हाथ नहीं हटाते जब कि वह स्वयं ही अपना हाथ न हटा ले।

हिजरत के समय जब सिद्दीक़–ए–अकबर (रज़ि0) के साथ मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो सेवा लेने वाले व सेवा करने वाले में अन्तर करना मुश्किल था। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि0) इस बात को ताड़ गये और खड़े होकर चादर से रसूलुल्लाह (स0अ0) पर साया कर लिया ताकि लोग रसूलुल्लाह (स0अ0) को पहचान लें।

उहद की जंग के अवसर पर रसूलुल्लाह (स0अ0) की राय मदीना मुनव्वरा ही में रहकर मुक़ाबला करने की थी किन्तु नवजवान सहाबा ने जब निकल कर मुक़ाबला करने की राय दी तो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अपनी राय पर उसको वरीयता दी और न जाने कितने ऐसे अवसर हैं।

घर में स्वयं रसूलुल्लाह (स0अ0) अपने काम–काज में व्यस्त हैं। हदीस में आता है: "आप अपने कपड़े ख़ुद साफ़ करते, बकरी का दूध दूहते, अपना काम ख़ुद करते थे।"

घरवालों के साथ हंसी व दिल्लगी भी लेकिन मर्यादा व संतुलन के साथ। अज़ान की आवाज़ सुनी हज़रत आयशा (रज़ि0) कहती हैं कि उस समय लगता था कि आप (स0अ0) हमको पहचानते ही नहीं। (सही बुख़ारी)

हज़रत हसन व हसैन (रज़ि0) आपकी गोद में है। आप उनको चूम रहे हैं। लिपटा रहे हैं और उनको दुलार कर रहे हैं। हज़रत उसामा को आप (स0अ0) गोद लेते हैं, चूमते हैं, और मुहब्बत का इज़हार करते हैं। मक्का विजय के अवसर पर जब रसूलुल्लाह (स0अ0) विजयी होकर

मक्का मुकर्रमा में प्रवेश करते हैं तो बन्दगी की शान के साथ सर झुका हुआ है लगता है कि ऊंट के कोहान से लग जाएगा और उस समय सवारी पर आप (स0अ0) ने गुलामज़ादों को सवार कर रखा है।

तबूक की जंग के अवसर पर सवारियां कम हैं। दो–तीन सहाबी बारी–बारी एक ही सवारी पर सवार होते हैं तो आप (स0अ0) ने अपने लिये भी क्रम लागू कर दिया था।

ख़न्दक खोदी जा रही है तो आप (स0अ0) इसमें शामिल हैं। एक सहाबी भूख की अधिकता बताते हैं और पेट खोलकर दिखाते हैं कि उस पर पत्थर बंधा हुआ है तो रसूलुल्लाह (स0अ0) तसल्ली देते हैं, फिर पता चलता है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने पेट पर दो–दो पत्थर बांध रखे हैं।

बदर की जंग इस्लाम की पहली जंग है। हक़ व बातिल की सेनाए आमने–सामने हैं। रात का समय हुआ लोगो ने आराम किया। किन्तु आप (स0अ0) व्यस्त हैं दुआ करने में और बन्दगी की इस शान के साथ की कन्धे से चादर गिर जाती है।

यह बन्दगी की चरम सीमा नही तो और क्या है कि आप (स0अ0) की मुबारक ज़बान से दुआओं के यह शब्द निकल रहे हैं:

"ऐ अल्लाह! मुझे मिस्कीन बनाकर ज़िन्दा रख, और मिस्कीन बनाकर वफ़ात दे, और मिस्कीनों में ही मेरा हश्र फ़रमा।"

और रसूलुल्लाह (स0अ0) कहते हैं कि:

"मुझे कमज़ोरों में तलाश करो।"

यह रसूलुल्लाह (स0अ0) के पवित्र जीवन के कुछ फूल हैं जो दिल व जान को महकाने के लिए पर्याप्त हैं। वरना रसूलुल्लाह (स0अ0) की का जीवन मानवता का वह हसीन बाग़ है जिसके झोंके क़यामत तक अल्लाह के बन्दों को बन्दगी के कमाल की ख़ुशबू देते रहेंगे। बन्दगी के कमाल के यह वे फूल हैं जो कभी मुरझाने वाले नहीं। उनकी ख़ुशबू हमेशा के लिए है और सबके लिए है।

सूरह इस्रा से "बन्दगी के कमाल" का पाठ मानवता को दिया गया है और आप (स0अ0) का पवित्र जीवन इसकी सुन्दरता भी है एवं इसकी पराकाष्ठा भी है और संतुलन का ऐसा मार्ग भी कि जो भी उस रास्ते पर चलेगा वह हिदायत के मार्ग का राही कहलाएगा और न जाने कितने भटके हुए लोगों की हिदायत का साधन बनेगा।

शेष : अत्याचारियों का परिणाम

अभी उसकी पकड़ के दिन से अपने आप को बचा लें। वरना उस दिन अल्लाह तआला का रहम केवल उन लोगो के साथ होगा जो अल्लाह के आदेश को मानने वाले हैं। उसका कहा मानने वाले हैं। उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं। इसीलिए स्पष्ट रूप से यह बात कह दी गयी उस अज़ाब के दिन से डरने का मक़ाम है, जिस दिन अत्याचारी चीख़–चीख़ कर यह कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमे कुछ और समय दे दीजिए, हम अच्छे कर्म करेंगे, अब हम तौबा करते हैं, यह वादा करते हैं कि तेरे रसूलों की बात मानेंगे, उनकी पैरवी करेंगे, तलाफ़ी माफ़ात की पूरी कोशिश करेंगे। अत्वारियों व चरित्रहीन व्यक्तियों के इस पछतावे को वर्णित करने के बाद कहा गया कि उस समय अल्लाह तआला उनको वे क़समें याद दिलाएगा जो वे दुनिया में खाया करते थे और बहुत इस्तेग़नाइयत के साथ कहते थे कि हम अपने स्थान से कभी नहीं हटेंगे। हमारे ऊपर हुए इन उपकारों का कोई पतन नहीं। अतः हम अपना यह पूर्वजों का धर्म भी नहीं छोड़ेंगे। इनकार करने वालों के इस वाक्य के बाद अल्लाह तआला अपने अधिकार व सम्पूर्ण शक्ति की घोषणा करते हुए कहता है कि हर चीज़ अल्लाह के अधिकार में है। यदि वह चाहता तो उनकी सभी साज़िशों को नाकाम बना देता लेकिन चूंकि दुनिया के जीवन में अल्लाह का उद्देश्य आज़माइश है, इसलिए उनको ढील दी और उनको समझाने की कोशिश की। हालांकि कभी–कभी उनकी साज़िशें इतनी संगीन होती थी कि पहाड़ भी उनकी बुनियाद पर अपनी जगह से हट जाए।

अन्त में कहा गया कि दुनिया में अत्याचारियों का फिरते रहना, साज़िशें रचना, इस बात की पहचान नहीं कि उनको सबकुछ प्राप्त हो गया। बल्कि उनको उनके कामों की सज़ा मिलेगी। अल्लाह तआला की बात मानने वाले मोमिनों को उनका बदला दिया जाएगा। अल्लाह तआला अपने वादे के ख़िलाफ़ काम करने वाला नहीं है। यद्यपि दुनिया में काफ़िरों को ढील देना, उनकी अवज्ञा पर छूट देना तत्वदर्शिता की बात है क्योंकि अल्लाह तआला हर चीज़ की तत्वदर्शिता से भलीभांति परिचित है। उसका सार्मथ्य हर चीज़ पर है। हर चीज़ उसके अधिकार व नियन्त्रण में है। वही बदला लेने वाला भी है।

नमाज़ की मकरूहात

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

कुछ ऐसे काम है जिनको नमाज़ की हालत में करने से हदीसों में रोका गया है। फिर उनमें से बहुत से को करने से नमाज़ ख़राब हो जाती है। उनका वर्णन हम पीछे कर चुके हैं और कुछ ऐसे काम हैं जिनको करने से नमाज़ ख़राब नहीं होती लेकिन नमाज़ के सवाब और बरकत में कमी आ जाती है। उनको मकरूहात कहा जाता है। अतः उन कामों के करने से बचने की भी पूरी कोशिश करनी चाहिए ताकि नमाज़ की बरकतें पूरे तौर पर हासिल हो सकें।

फिर मकरूहात दो तरह के हैं:

1– मकरूह तहरीमी

2– मकरूह तन्ज़ीहीयह

मकरूह तहरीमी

वह है जिसको मना होने की दलील ज़िन्निस्सुबूत या ज़िन्निद्दलाला हो या जिसके करने से किसी वाजिब का तर्क लाज़िम आता हो। अगर नमाज़ की हालत में को मकरूह तहरीमी काम हो जाए तो नमाज़ का दोहराना शरीअत के अनुसार वाजिब होता है।

मकरूह तन्ज़ीहीः वह है जिसके करने से किसी मुस्तहब या अफ़ज़ल काम का छोड़ना लाज़िम आता हो, उसको करने से नमाज़ का दोहराना वाजिब नहीं होता, लेकिन दोहरा लेना सवाब वाला काम होता है। (शामी)

हम पहले उन कामों का वर्णन करते हैं जिनको मकरूह तहरीमी घोषित किया गया है और बाद में उन कामों का वर्णन होगा जो मकरूह तन्ज़ीही हैं।

1– नमाज़ के अन्दर "सदल" मकरूह तहरीमी है। "सदल" का शाब्दिक अर्थ इरसाल अर्थात कपड़े को लटकाने का है। और शरीअत के भाषा में "सदल" यह है कि नमाज़ की हालत में चादर या रूमाल सर या दोनो कंधो पर डाल ले, और उसके दोनों सिरों को दूसरी ओर न लपेटे, या कोट या शेरवानी जैसी चीज़ों को इस प्रकार पहने कि हाथ आस्तीन से बाहर हों। (शामी)

2– इसी प्रकार सजदे के लिए जाते हुए कपड़ों को मिट्टी से बचाने के लिए मोड़ना भी मकरूह तहरीमी है इसलिए कि हदीस शरीफ़ में इससे मना किया गया है। इसी में यह सूरत भी है कि आस्तीन या दामन चढ़ाते हुए नमाज़ में दाख़िल हो, यदि वुज़ू करने के बाद आस्तीन चढ़ी हुई थी और उसी हालत में रकआत पाने के लिए नमाज़ में चला गया तो बेहतर यह है कि अमल–ए–क़लील के द्वारा आस्तीने ठीक कर ले। (शामी)

3– नमाज़ की हालत में बिना ज़रूरत बदन, कपड़ों या दाढ़ी इत्यादि से खिलवाड़ करना भी मकरूह तहरीमी है हां यदि कहीं खुजली हो रही थी और केवल एक हाथ का इस्तेमाल करके खुजला लिया और यदि एक–दो बार ऐसा कर ले तो कोई हर्ज नहीं। और यदि दोनों हाथ से खुजलाया या लगातार तीन बार या उससे अधिक खुजलाया तो अमल–ए–कसीर हो जाएगा और नमाज़ ख़राब हो जाएगी। (शामी)

4– पेशाब, पाख़ाना या रियाह के सख़्त तक़ाज़े के साथ नमाज़ भी मकरूह तहरीमी है। यदि नमाज़ शुरू करने से पहले यह तक़ाज़े हों तो नमाज़ शुरू ही न करे और अगर नमाज़ शुरू करने के बाद इस तरह की हालत पैदा हो गयी हो तो यदि नमाज़ का समय बाक़ी है तो उसको चाहिए कि नमाज़ तोड़ दे और ज़रूरत से फ़ारिग़ होकर सुकून से नमाज़ पढ़े, चाहे जमाअत ही क्यों न छूट जाए लेकिन यदि नमाज़ का समय चले जाने का डर हो उसी प्रकार नमाज़ पढ़ ले। (शामी)

5– मर्द के लिये यह भी मकरूह तहरीमी है कि बालों की चोटियां बनाकर नमाज़ पढ़े या औरत की तरह सर के पिछले हिस्से में बालों को औरत की तरह लपेटे। लेकिन यह कराहत औरतों के लिए नहीं है। इसलिए कि

मुस्लिम, अबूदाऊद, और इब्ने माजा इत्यादि में इस काम से ख़ास तौर पर मर्दों को रोका गया है। (शामी)

6– नमाज़ पढ़ने के दौरान उंगलियां चटख़ाना भी मकरूह तहरीमी है। इसलिए कि मुस्लिम और इब्ने माजा में रसूलुल्लाह (स0अ0) की हदीस आयी हुई है कि आप (स0अ0) ने कहाः नमाज़ पढ़ने की हालत में उंगलियां मत चटखाओ, नमाज़ के इन्तिज़ार में उंगलियां चटखाने से मना किया गया है इसलिए कि नमाज़ का इन्तिज़ार करने वाला भी नमाज़ पढ़ने वाले के हुक्म में होता है। और हदीस शरीफ़ में साफ़ तौर आता है कि उसको नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलता है। लिहाज़ा उन दोनों के लिए उंगलियां चटख़ाना मकरूह है, परन्तु इनके अतिरिक्त किसी आवश्यकता के लिए उगंलियां चटख़ाना मना नहीं है।

ऊपर जिन जगहों पर उंगलियां चटख़ाने की कराहत का वर्णन किया गया है उन सभी जगहों में एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना भी मकरूह तहरीमी है, इसलिए कि अबूदाऊद की एक हदीस में इससे भी मना किया गया है। (शामी)

7– नमाज़ पढ़ने की हालत मे सुन्नत जगह पर हाथ बांधने के बजाए कमर पर हाथ रखना भी मकरूह तहरीमी है, इसलिए कि बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत में नमाज़ पढ़ने की हालत में "ख़सिर या इख़्तिसार" से मना किया गया है। इसके कई अर्थ लिये गये हैं जिनमें सबसे मशहूर माने कमर पर हाथ रखने के हैं। (शामी)

8– नमाज़ पढ़ने के दौरान चेहरे को क़िब्ले से हटाकर इधर–उधर फेरना भी मकरूह तहरीमी है। इसलिए कि हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम (स0अ0) ने कहाः नमाज़ में इल्तिफ़ात से बचो, इसलिए कि नमाज़ में इधर–उधर चेहरा फेरना हलाकत है। बुख़ारी की रिवायत में कहा गया है कि इस तरह करना वास्तव में शैतान का बन्दे की नमाज़ उचक ले जाना है। ध्यान रहे कि यदि चेहरे के साथ सीना भी फिर जाए तो नमाज़ ख़राब हो जाती है। जबकि चेहरा फेरे बिना यदि आंखो से देखे तो ज़रूरत के वक़्त जायज़ है और बिना आवश्यकता के मकरूह तन्ज़ीही है।

9– नमाज़ में कुत्ते की तरह सरीन टेक कर और पैर खड़े करके बैठना, उसी प्रकार मर्द के लिए सजदे की हालत में कलाइयों का ज़मीन पर बिछा लेना भी मकरूह तहरीमी है। इसलिए कि इसको हदीस में मना किया गया है। और हज़रत आयशा (रज़ि0) की हदीस में सजदे में हाथ बिछाने की मनाही को मर्द के लिए ख़ास किया गया है। (शामी)

10– यदि कोई व्यक्ति क़िब्ले की ओर पीठ करके बैठा हुआ है और उसका चेहरा नमाज़ पढ़ने वाले की ओर है तो ऐन उसके सामने नमाज़ पढ़ना भी मकरूह तहरीमी है। इसलिए कि बुख़ारी में हज़रत उस्मान (रज़ि0) से उसकी कराहत आयी है और बज़ाज़ में हज़रत अली (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की ओर रूख़ करके नमाज़ पढ़ते देखा तो आपने उसको नमाज़ दोहराने का आदेश दिया। (शामी)

11– किसी चादर से अपने पूरे शरीर को सर से लेकर पैर तक इस प्रकार लपेट लेना भी मकरूह तहरीमी है कि उससे हाथ भी न निकाला जा सकता हो। इसलिए कि हदीस शरीफ़ में "इश्तमाल समा" से मना किया गया है और उसकी व्याख्या उलमा ने यही की है। (शामी)

12– हर ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना मकरूह तहरीमी है जहां गंदगी का शक हो। जैसे हम्माम, शौचालय इत्यादि इसी तरह यदि क़ब्रिस्तान में इस प्रकार नमाज़ पढ़े कि सामने क़ब्र हों तो भी मकरूह तहरीमी है। (शामी) इसलिए कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है फ़रमाते हैंः नबी करीम (स0अ0) ने सात जगहों पर नमाज़ पढ़ने से मना किया हैः घूरे पर, जानवर ज़िबह करने की जगह पर, क़ब्रिस्तान में, चालू रास्ते पर, हम्माम में, ऊंट के बाड़े में, बैतुल्लाह के ऊपर। (तिरमिज़ी)

13– ऊपर की हदीस से यह बात भी मालूम हुई कि चालू रास्ते पर नमाज़ पढ़ना भी मकरूह तहरीमी है इसलिए कि इससे गुज़रने वालों को तकलीफ़ होगी। (शामी)

14– अकारण अकेले माथे पर सजदा करना, और नाक को ज़मीन पर न टेकना भी मकरूह तहरीमी है।

(मुराक़िउल फ़लाह)

15– नमाज़ में बिना आवाज़ हंसना मकरूह तहरीमी है, हल्की आवाज़ से हंसे तो नमाज़ ख़राब हो जाएगी, और तेज़ आवाज़ से हंसे तो नमाज़ के साथ–साथ वुज़ू भी टूट जाता है। (शामी)

16– इमाम का अकेले एक फ़िट या उससे अधिक ऊंची जगह पर अकारण खड़ा हो जाना भी मकरूह तहरीमी है। इसलिए कि मुस्तदरक हाकिम और दारे कुत्नी में रसूलुल्लाह (स0अ0) के द्वारा उसका मना होना नक़ल किया गया है। लेकिन यदि कोई डर है या इमाम के साथ मुक़्तदियों में भी एक–दो आदमी खड़े हो जाएं तो कराहत नहीं रहेगी।

17– यदि जमाअत हो रही है और अगली सफ़ में जगह खाली और फिर भी कोई व्यक्ति पिछली सफ़ में अकेले खड़ा हो गया तो यह काम मकरूह तहरीमी होगा और यदि अगली सफ़ में जगह ख़ाली नहीं है तो अगर वह समझता है कि किसी को आसानी के साथ अगली सफ़ से पीछे लाया जा सकता है, वह मसले को जानता भी जिसकी वजह से नमाज़ ख़राब कर लेने का ख़तरा नहीं है तो बेहतर यही है कि उसको पीछे ले आए वरना यदि इस तरह का व्यक्ति मौजूद नहीं है तो बेहतर यही है कि किसी को पीछे लाने की कोशिश न करे बल्कि अकेले खड़ा हो जाए। (शामी)

18– यदि इमाम ने किसी आने वाले नमाज़ी को पहचान लिया और उसके लिए रुकूअ या क़िराअत इत्यादि को लम्बा किया तो मकरूह तहरीमी है इसलिए कि क़िराअत या रुकूअ को ग़ैरुल्लाह के लिए करने का शुब्हा पैदा हो रहा है लेकिन आने वाले को पहचाने बिना रुकूअ लम्बा किया तो इसकी गुंजाइश है लेकिन इतना लम्बा न करे कि लोग उकता जाएं। बस आम आदत से एक या दो तस्बीह बढ़ा ले। अफ़ज़ल बहरहाल यही है कि किसी भी सूरत में किसी के लिए रुकूअ लम्बा न करे चाहे पहचाना हो या नहीं। (शामी)

19– ऐसे कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़ना भी मकरूह तहरीमी है जिसमें किसी जानदार की तस्वीर बनी या कढ़ी हो। इसी तरह अगर जानदार का फ़ोटो सर के ऊपर या दाएं–बाएं लगा हुआ हो तो भी नमाज़ मकरूह तहरीमी होगी। अगर पीछे हो तो कराहियत उसमें भी है, लेकिन ऊपर की शक्लों के मुक़ाबले उसमें कम कराहियत है। (शामी)

20– नमाज़ के लिए सर पर रूमाल इस तरह बांधना कि सर का बीच का हिस्सा खुला रहे, मकरूह तहरीमी है। बहुत से उलमा ने इस तरह रूमाल बांधने को नमाज़ से बाहर भी मकरूह क़रार दिया है। (शामी)

21– नमाज़ में आसमान की तरफ़ निगाहें उठाना भी मकरूह तहरीमी है, इसलिए कि बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में इससे मना किया गया है। (अलबहरुर्राएक़)

22– अगर नमाज़ की दूसरी रकआत में पहली रकआत में भी पढ़ी गयी सूरत से पहली सूरत जानबूझ कर पढ़ी तो यह काम मकरूह तहरीमी होगा। (तहतावी)

मकरूह तन्ज़ीहीयह

तन्ज़ीही उसको कहते हैं जिसको छोड़ने से किसी अफ़ज़ल या मुस्तहब काम को छोड़ना लाज़िम आ रहा हो और क्योंकि महत्व के अनुसार सवाब के कामों में मर्तबे में अन्तर होता है और बहुत से सवाब के काम की ताकीद अधिक होती है, इसी कारण बहुत सी मकरूह तन्ज़ीहीयह मकरूह तहरीमी तक पहुंच जाती हैं, यह अन्तर दलील को देखकर विद्वान ही कर सकते हैं। (शामी)

1– नमाज़ की हालत में ऐसे कपड़े पहनना चाहिए जो अल्लाह के दरबार में हाज़िर होने के लिए मुनासिब हों। इसीलिए ऐसे कपड़ों में नमाज़ पढ़ना जिनको पहनकर बड़े लोगों के पास जाना मुनासिब नहीं समझा जाता मकरूह तन्ज़ीही है। (शामी)

2– रसूलुल्लाह (स0अ0), असहाब–ए–किराम, बुज़ुर्गों ने हमेशा सर ढाक के नमाज़ अदा की है अतः नमाज़ पढ़ते समय टोपी या अमामे से सर को ढांक लेना चाहिए। लेकिन यदि केवल सुस्ती के कारण टोपी लगाए बिना नमाज़ पढ़ी तो मकरूह तन्ज़ीही है। आजकल बहुत से लोग टोपी को बिल्कुल ग़ैर ज़रूरी कह देते हैं और बहुत से लोग ज़िद में भी नमाज़ के वक़्त टोपी उतार देते हैं उनको ऊपर की दलील पर ग़ौर करना चाहिए और जो लोग टोपी को फ़र्ज़ का दर्जा देते हैं कि कई बाद सर ढांकने के लिए कोई चीज़ न हो तो किसी चीज़ को

तलाशने में रकआत तक छोड़ बैठते हैं, उनको भी इस मसले को समझ लेना चाहिए। (शामी)

3– पीछे नमाज़ को ख़राब करने वाली चीज़ों का वर्णन किया जा चुका है कि नमाज़ के पढ़ने के दौरान ज़बान से सलाम करना या जवाब देना नमाज़ को ख़राब कर देता है, लेकिन अगर ज़बान के बजाए सर या हाथ के इशारे से सलाम का जवाब दिया जाए तो उससे नमाज़ ख़राब नहीं होती, लेकिन यह मकरूह तन्ज़ीही है। और यदि किसी ने सलाम कर ही लिया तो सलाम फेरने के बाद जवाब दे देना मुनासिब है। (शामी)

इसीलिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) से रिवायत है, कहते हैंः हब्शा जाने से पहले हम रसूलुल्लाह (स0अ0) को सलाम करते थे, जबकि आप नमाज़ में होते थे, फिर जब हम हब्शा से लौटे तो मैं आप (स0अ0) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप (स0अ0) को नमाज़ पढ़ते हुए पाया, मैंने आप (स0अ0) को सलाम किया तो आप (स0अ0) ने जवाब नहीं दिया, यहां तक कि जब आप (स0अ0) ने नमाज़ पूरी कर ली तो कहाः अल्लाह तआला अपने आदेश को चाहता है प्रकट करता है और जिन कामों को अल्लाह ने ज़ाहिर किया उनमें से यह भी है कि नमाज़ में बात न किया करो। तो आपने मेरे सलाम का जवाब दिया और कहा कि नमाज़, कुरआन की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र के लिए है। अतः जब तुम नमाज़ में हो तो तुम्हारा यही काम होना चाहिए। (अबूदाऊद)

4– नमाज़ के लिये क़याम (खड़े होने के समय) दोनों पैरो पर बराबर वज़न रखना चाहिए। किसी एक पैर पर बिना ज़रूरत ज़्यादा ज़ोर देकर खड़ा होना भी मकरूह है। (शामी)

5– नमाज़ के बीच और आख़िरी क़ादा (बैठक) में बैठने का सुन्नत तरीक़ा बताया जा चुका है यदि इस सुन्नत तरीक़े को बिना कारण छोड़ दिया जाए और पलथी मारकर बैठा जाए या दोनों पैर खड़े करके एड़ियों पर बैठा जाए तो यह मकरूह तन्ज़ीही है। (शामी)

6– नमाज़ पढ़ने के दौरान आंखो को बन्द कर लेना भी मकरूह तन्ज़ीही है। इसलिए कि एक ज़ईफ़ हदीस में इससे मना किया गया है। (इब्ने अदी) बल्कि हर मौक़े पर निगाह वहां रखनी चाहिए जहां निगाह रखने को मुस्तहब बताया गया है। (शामी)

7– नमाज़ पढ़ने के दौरान आयत या तस्बीह को उंगलियों पर गिनना मकरूह तन्ज़ीही है। लेकिन यदि ज़रूरत पड़ जाए जैसा कि सलातुत्तस्बीह में ज़रूरत पड़ सकती है तो यह किया जा सकता है कि एक बार तस्बीह पढ़ते हुए एक उंगली को अपनी जगह पर रखते हुए दबा दिया जाए, इस तरह करने से ज़रूरत भी पूरी हो जाएगी और कराहत भी नहीं रहेगी। (शामी)

8– मुंह में सिक्का या कोई ऐसी चीज़ रखकर नमाज़ पढ़ना मकरूह तन्ज़ीही है, जिससे सुन्नत के अनुसार क़िराअत न हो सके और यदि कोई ऐसी चीज़ रख ली जिससे क़िराअत हो ही नहीं सकती तो नमाज़ ख़राब हो जाएगी। (शामी)

9– ऊपर आ चुका है कि क़िब्ले से सीना फेर लेने से नमाज़ ख़राब हो जाती है और सीना फेरे बिना चेहरा इधर–उधर फेरना मकरूह तहरीमी है। लेकिन चेहरा इधर–उधर किये बिना यदि इधर–उधर निगाह डाली जाए तो यह मकरूह तन्ज़ीही होगा। (शामी)

इसलिए कि हज़रत आयशा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) से नमाज़ मे इधर–उधर देखने के बारे में पूछा गया तो आप (स0अ0) ने कहाः यह एक ऐसी चीज़ है जिससे शैतान बन्दे की नमाज़ को उचक लेता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

जबकि तिरमिज़ी व नसाई में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) (चेहरा फेरे बिना निगाहों से) दाएं–बाएं देखा करते थे।

10– नमाज़ पढ़ने के दौरान अंगड़ाई लेना मकरूह है। इससे बचना चाहिए। इसलिए कि यह बड़ी बेअदबी की बात है। (हिन्दिया)

11– नमाज़ पढ़ने के दौरान यदि जूं या मच्छर मारते हुए अमल–ए–कसीर हो जाए तो नमाज़ ही ख़राब हो जाएगी। लेकिन अगर अमल–ए–क़लील से मारा तो यदि उसने तकलीफ़ पहुंचाना शुरू कर दिया था तो ऐसा करना मकरूह नहीं होगा लेकिन यदी तकलीफ़ देने से पहले ही मार डाला तो मकरूह होगा। (शामी)

12– इमाम यदि मेहराब के अन्दर पूरा का पूरा इस

तरह खड़ा हो जाए कि उसके पैर भी मेहराब के अन्दर हों तो मकरूह तन्ज़ीही है। लेकिन यदि भीड़ ज़्यादा होने की वजह से ऐसा किया तो कराहत नहीं रहेगी। इसी तरह यदि क़दम मेहराब से बाहर हों तो कराहत नहीं रहेगी। (शामी)

13– अपनी पगड़ी, टोपी या रूमाल इत्यादि (जिसको अपने ऊपर डाले हुए हो) पर सजदा करना मकरूह है। या माथा सीधे ज़मीन पर टेके या ज़मीन पर बिछी हुई चीज़ पर। (हल्बी कबीर)

14– नमाज़ पढ़ने के दौरान यदि किसी लेख पर निगाह पड़ गयी और दिल ही दिल में उसको पढ़कर उसके अर्थ को समझ लिया तो उसकी नमाज़ ख़राब नहीं होगी लेकिन जानबूझ कर ऐसा करना मकरूह है। (शामी)

जिन कामों के आवश्यक होने पर नमाज़ तोड़ना जायज़ है:

1– यदि नमाज़ पढ़ने के दौरान सांप या बिच्छू आ जाए, और नमाज़ पढ़ने वाले को डर हो कि यह उसको तकलीफ़ पहुंचाएगा, तो उसको मारना जायज़ है। इसलिए कि हदीस शरीफ़ में इसकी आज्ञा दी गयी है। अब यदि अमल–ए–क़लील से ही उनको मार डालता है तो सही कथन के अनुसार नमाज़ टूट जाएगी, लेकिन इस तरह के अवसर पर इस काम से कोई गुनाह नहीं होगा और यदि सांप या बिच्छू से किसी नुक़सान का ख़तरा न हो तो उसका मारना मकरूह होगा। (शामी)

2– यदि जानवर के भाग जाने का डर हो या बकरियों पर भेड़िये इत्यादि के हमले का डर हो गया हो तो नमाज़ तोड़ देना जायज़ है। (शामी)

3– जब हांडी चूल्हे पर चढ़ी हुई हो और उबलने लगे और ख़तरा हो कि एक दिरहम के बराबर माल बेकार हो जाएगा या एक दिरहम के बराबर कोई दूसरा माल चोरी हो जाने का या ख़राब हो जाने का ख़तरा हो तो चाहे सामान अपना हो या दूसरे का तो उसको बचाने के लिए भी नमाज़ का तोड़ देना जायज़ है। (शामी)

एक दिरहम होने का मतलब यह है कि सामान का मूल्य 3 ग्राम 62 मिली ग्राम चांदी के मूल्य के बराबर हो।

4– यदि कोई व्यक्ति नफ़िल नमाज़ पढ़ रहा हो और माता–पिता में से कोई उसको पुकारने लगे जबकि उनको पता हो कि वह नमाज़ पढ़ रहा है तो नमाज़ तोड़ते हुए उनको जवाब दे सकता है लेकिन यदि उनको मालूम नहीं है कि नमाज़ पढ़ रहा है तो जवाब देना ज़रूरी होगा और यदि फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहा हो तो जवाब देना जायज़ नहीं है, यह बात और है कि पता चले कि वे किसी मुश्किल में हैं। (शामी)

जिन कामों के कारण नमाज़ तोड़ना वाजिब या फ़र्ज़ हो जाता है:

1– यदि नमाज़ के दौरान छोटा या बड़ा इस्तिन्जा तेज़ी से लग जाए इस तरह कि दिल पूरी तरह से उसी में लग जाए तो नमाज़ पढ़ने वाले पर वाजिब है कि नमाज़ तोड़ दे और फ़ारिग़ होकर फिर से नमाज़ अदा करे। (शामी)

इसलिए कि हदीस शरीफ़ में आया है कि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो यह हलाल नहीं कि सख़्त इस्तिन्जा लगा होने की हालत में नमाज़ पढ़े यहां कि (फ़ारिग़ होकर) हल्का हो जाए।

2– यदि किसी नाबीना (अंधे) के कुवें इत्यादि में गिरकर मर जाने का डर हो तो या किसी के डूब जाने या आग से जलकर मर जाने का डर हो तो या कोई अत्यधिक परेशानी में पुकार रहा हो तो आदमी पर लाज़िम है कि नमाज़ तोड़ दे और उनकी जान बचाए। (शामी)

3– यदि कोई दायी नमाज़ पढ़ रही थी, इस हालत में प्रसव पीड़ा होने लगी और उसको ख़तरा है कि नमाज़ जारी रखी तो जच्चा या बच्चा का जीवन ख़तरे में पड़ जाएगा तो वह नमाज़ तोड़ सकती है और यदि अभी नमाज़ शुरू नहीं की थी तो इस प्रकार के ख़तरे को देखते हुए नमाज़ में देर कर सकती है। (नूरुल ईज़ाह)

इन समस्याओं पर विचार करके कहा जा सकता है कि यदि मरीज़ की हालत गंभीर हो तो डाक्टर भी नमाज़ के वक़्त में देरी कर सकता है, और पढ़ रहा हो तो नमाज़ तोड़ सकता है। शर्त यह है कि कोई उस जैसा डाक्टर मौजूद न हो। वल्लाहु आलम

इस्लामी पहनावा

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

इस्लाम अपनी शिक्षाओं में पूरी मानवता को ध्यान में रखता है। पहनावे (लिबास) के बारे में भी उसने कुछ स्थायी व आकाशीय नियम बना रखे हैं। इन नियमों को सामने रख कर कोई भी क़ौम अपनी–अपनी पसंद का पहनावा अपना सकती है। इस्लाम ने पहनावे का कोई विशेष रूप या शक्ल निश्चित नहीं किया है। इस आधार पर हर दौर में हर क़ौम के लिए (जो मुसलमान हो) इस्लामी नियमों के अनुसार ढ़ंग का और सभ्यता पर आधारित पहनावा अपनाने में कोई कठिनायी नहीं होती।

इस्लामी पहनावे के मूलभूत नियम यह हैं:

1– पहनावा सतर ढ़ंकने वाला हो, यानि मर्द व औरत के लिए शरीर के जिन हिस्सों का ढ़ांकना ज़रूरी है उसे पूरी तरह से ढ़ांकने वाला हो। यही पहनावे का वास्तविक उद्देश्य है। इसी से इनसान जानवर से श्रेष्ठ होता हैं। पहनावा यदि सतर को भी न ढांके तो उसमें और कपड़ा न पहनने में कोई अन्तर बाक़ी नहीं रहेगा। क़ुरआन कहता है:

"ऐ आदम की औलाद! हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारी शर्मगाहों को छिपाता है और तुम्हारे लिए ज़ीनत का कारण है।"

2– हर प्रकार की मैल, कुचैल व गंदगी से पाक हो। क़ुरआन करीम की मुबारक आयत "आप अपने कपड़ों को पाक व साफ़ रखें" इसका आदेश देती है। अल्लाह तआला को अपने पाक व साफ़ बन्दे बहुत पसंद हैं। "ख़ूब पाक व साफ़ रहने वाले अल्लाह को बहुत पसंद हैं।" लिबास को नजासत से पाक रखना ज़रूरी, और मैल–कुचैल से पाक रखना शरीअत के निकट बहुत ही प्रिय है।

3– टख़नो से नीचे न हो। यह मर्द के लिए घमन्ड की पहचान है। इससे घमन्ड पैदा होने का ख़तरा रहता है। हदीस में ऐसे व्यक्ति के बारे में बहुत कठोर शब्द आए हैं। इरशाद है: "क़यामत के दिन वह व्यक्ति अल्लाह की निगाहे करम से वंचित रहेगा जो घमन्ड में अपने पाजामे को लटकाए।"

इसी प्रकार कपड़ा इतना बारीक व महीन भी न हो कि अन्दर के अंग प्रकट हों, यह कपड़ा न पहनने की तरह है। इसी तरह इतना चुस्त व तंग भी न हो कि छिपाने वाले अंगों की बनावट प्रकट हो। एक बार हज़रत असमा (रज़ि0) नबी करीम (स0अ0) की सेवा में उपस्थित हुईं। उनका लिबास थोड़ा बारीक व महीन था, रसूलुल्लाह (स0अ0) ने मुंह फेर लिया, और उनको नसीहत की कि इस प्रकार का पहनावा ठीक नही है। एक और जगह आता है कि: "दुनिया में कुछ पहनावा पहनने वालियां ऐसी होंगी जो आख़िरत में बेलिबास होंगी।" इस हदीस की एक व्याख्या यह भी की गयी है कि इससे मुराद वे औरते हैं कपड़े पहन कभी न पहने हुए प्रतीत होती हैं। ऐसी औरतें आख़िरत में सज़ा की हक़दार होंगी।

यह साधारणतय: अक़्ल में आने वाली बात है कि अल्लाह ने पहनावे को तन ढंकने का साधन बनाया है। इसी को यदि कोई बदन नुमायां करने का साधन बनाता है तो यह अल्लाह के आदेश के साथ मक्कारी है, जो अल्लाह को गवारा नहीं है।

इस्लाम का एक आदेश यह भी है कि मर्द औरत के पहनावे में अन्तर का विशेष ध्यान रखा जाए। वे एक दूसरे का पहनावा न पहनें। इस्लाम पहनावे के द्वारा गंभीरता व सम्मान को बढ़ावा देता है। पहनावा उसके निकट तमाशा नहीं है कि आदमी एक मज़ाक़ बन जाए। मर्द–औरत एक दूसरे का लिबास पहनें। इस्लाम इसे प्रकृति से विद्रोह का एक रूप घोषित करता है। नबी करीम (स0अ0) ने ऐसे लोगों पर लानत फ़रमायी है। इसलिए कि ऐसे लोग एक साफ़–सुथरे समाज को पूरा ड्रामा बना देते हैं। मर्द की मर्दान्गी उससे प्रभावित होती है और स्त्री का स्त्रितत्व मर्दों के पहनावे से कठोरता में बदल जाता है। बाह्य अन्तरात्मा पर प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता है।

यह पहनावे से संबंधित इस्लाम की पवित्र शिक्षाएं हैं जिनको यदि सही रूप और अच्छी भावना के साथ प्रयोग किया जाए तो निश्चित ही एक साफ़–सुथरा समाज अस्तित्व में आयेगा और वर्तमान ग़ैरइस्लामी सभ्यता ने जो बेढ़ंगा पहनावा दुनिया को दिया है बल्कि यूं कहें कि पहनावे के नाम पर जिस तरह से नंगे पन की लहर चल पड़ी है उसकी समाप्ति भी इन्हीं पवित्र शिक्षाओं के द्वारा हो सकती है। "तक़वे का लिबास सबसे बेहतर है।"

असहिष्णुता एवं नफ़रत की राजनीति को बढ़ावा

मौलाना अज़ीज़ुल हसन सिद्दीक़ी

देश का वातावरण असहनशीलता एवं साम्प्रदायिकता के ज़हर से अस्त–व्यस्त एवं विषाक्त हो गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल के आरम्भिक चार महीनों में साम्प्रदायिक हिंसा की 330 घटनाएं हो चुकी हैं। बहुत से सत्यवान एवं न्यायप्रिय ग़ैरमुस्लिम साहित्यकार जो साम्प्रदायिकता एवं नफ़रत की राजनीति के सदा विरोधी रहे मौत की नींद सुला दिये गये। बीफ़ खाने का ग़लत आरोप लगाकर मुहम्मद अख़लाक़ को मौत के घाट उतार दिया गया लेकिन शासक वर्ग के दिल नहीं पसीजे। पूरे देश में विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों ने विरोध प्रकट करने के लिए अपने एवार्ड लौटाए किन्तु सरकार टस से मस न हुई। इससे अधिक दुख और अफ़सोस की बात यह है कि उर्दू के कुछ साहित्यकारों के सिवा किसी ने भी दूसरी भाषाओं के साहित्यकारों के साथ खड़े होने का साहस नहीं किया। कहा जा सकता है कि उन्होंने बुज़दिली और निफ़ाक़ की हद कर दी।

हमारा हाल यह है कि हमने ज़बान के विरोध को ही सबकुछ समझ रखा है। दूसरों के साथ मिलकर भी हम कुछ करने को तैयार नहीं होते।

हमें वास्तविकताओं से नज़रे चुराने की आदत सी पड़ गयी है। शुतुरमुर्ग की भांति रेत में सर छिपाने से तूफ़ान टलता तो कभी का टल गया होता।

देशवासियों ने असहनशीलता के प्रश्न पर जिस प्रकार सरकार को घेरा है उसका उदाहरण नहीं मिलता। पिछले लोकसभा के चुनाव में एनडीए के विरुद्ध 69 प्रतिशत वोट देकर वर्तमान शासक वर्ग को उसकी औक़ात बता दी थी और अब उन्होंने धर्मनिरपेक्षता पर यक़ीन रखने वाली पार्टियों का सहयोग करके और बिहार में सयुंक्त मोर्चे को सफल बनाकर साम्प्रदायिक शक्तियों को सचेत कर दिया है कि यदि उन्होंने अपनी रविश एवं तरीक़ा नहीं बदला तो इससे अधिक कठोर एवं संगीन परिणाम भुगतने के लिये तैयार रहें।

हमें ऐसे सभी लोगों का आभारी होना चाहिए जिन्होंने जनसभाओं में और संसद में साम्प्रदायिक शक्तियों को आइना दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह बात भी बड़ी खुशी की है कि राष्ट्रपति ने यह कह कर "देश में सड़कों पर गन्दगी नहीं है बल्कि लोगो के दिमाग़ों में है और इसको साफ़ करने की आवश्यकता है" अपने पद का तो हक़ अदा किया ही है साथ ही साथ बड़े–बड़े पदों पर बैठे लोगों को सचेत भी किया है कि वे अपने वर्तमान तरीक़े से परहेज़ करें वरना देश और राष्ट्र को नुक़सान व तबाही से नहीं बचाया जा सकता है।

नाव में छेद करने वालों को सोचना चाहिये कि छेद से जब पानी नाव में आयेगा तो नाव का डूबना स्वाभाविक है और स्पष्ट है कि इसमें जितने सवार होंगे सब डूबेंगे। राष्ट्रपति महोदय ने यही बात समझाने का प्रयास किया है। काश की सत्ता के नशे में चूर लोगों को अब भी होश आ जाए।

मुसलमानों को ख़ुश होना चाहिए और अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए बुराई का पतन एवं अच्छाई का उदय हो रहा है। दूध का दूध और पानी का पानी हो रहा है। सच बोलने वालों की संख्यां बढ़ रही है और ज़ालिम मुंह छिपाते फिर रहे हैं। याद रखिये इन्दिरा गांधी की इमरजेंसी भारतीय ज़्यादा दिनों तक बर्दाश्त नहीं कर सके थे फिर वे कैसे एनडीए की इमरजेंसी (जिसकी ओर लाल कृष्ण आडवाणी ने पहले ही इशारा कर दिया था) झेलेगी।

यदि हमें देश में अपना खोया हुआ स्थान वापिस पाना है तो निकम्मेपन को छोड़ना होगा और खुश फ़हमी के खोल से बाहर निकलना होगा। किनारे के तमाशाई नहीं बल्कि डूबने वाले को बचाने वाला बनना होगा। उलमाए किराम जो देश की आज़ादी के बाद समझ बैठे थे कि उनका काम ख़त्म हो गया ख़ूब अच्छी तरह समझ लें कि उनका काम तो अब शुरू हुआ है। राजनीति से किनारा करना, जन समस्याओं से पीछा छुड़ाना केवल उनके लिये ही नहीं बल्कि पूरी क़ौम के लिए सम–ए–क़ातिल साबित हुआ है। उन्हें इस देश का नेतृत्व करना था जबकि वे दूसरों के पीछे चलने लगे और हाशिये पर डाल दिये गये। मुज़फ़्फ़रनगर की घटना ने उन्हें चहारदीवारी से बाहर निकाला था अब वे फिर क़िला बन्द होने का प्रयास न करें और अपने बुज़ुर्गों की भांति मदरसा भी संभाले और बाहर की दुनिया से भी संबंध बनाये रखें। उन्हें याद रखना चाहिये कि 1857ई0 में उनके पूर्वज जागरुक थे फिर 1947ई0 में भी वही आगे–आगे रहे और साम्प्रदायिकता एवं फ़ाशिज़्म के दानव का सामना किया। आज फिर समय

जर्मनी में मुस्लिम शरणार्थी बच्चों के अंगों का व्यापार

जर्मनी में मुस्लिम शरणार्थी बच्चों के अंगों के व्यापार का धंधा शुरू हो गया है। बच्चों का अपहरण करके उनके गुर्दे, जिगर और दूसरे अंग निकाल कर यूरोपीय देश स्मग्ल किये जा रहे हैं। जबकि बच्चों को अंगों का व्यापार करने वाले माफ़ियाओं के हाथ बेचा जा रहा है, जबकि बच्चियों को वैश्यावृति के लिए बेचा जा रहा है। जर्मन मुस्लिम संगठनों ने इस बात को स्वीकार किया है। बर्लिन में शरणार्थियों के सुधार हेतु कार्यरत स्थानीय मुसलमानों की संस्था "सेन्ट्रल कौन्सिल ऑफ़ जर्मन मुस्लिम" के चेयरमैन ईमान मुज़ेक ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में बताया कि पिछले 23 माह के दौरान 5 हज़ार से ज़्यादा मुसलमान बच्चों और बच्चियों का अपहरण किया जा चुका है। सूचना है कि यह अंगों का व्यापार करने वाले माफ़िया स्थानीय अस्पतालों में बच्चों के अंगों को निकालकर यूरोपीय देशों में स्मगल कर रहे हैं और बच्चियों को वैश्यावृति कराने वाले माफ़ियाओं के हाथों बेचा जा रहा है। लेकिन इस बुरे धंधे पर पुलिस और जर्मन वफ़ाक़ी सस्थाएं ख़ामोश तमाशाई बने हैं। दूसरी ओर सयुंक्त राष्ट्र समेत तमाम अन्तर्राष्ट्रीय सहायतार्थ संस्थाओं ने जर्मन मुस्लिम संस्था की ओर से किये जाने वाले खुलासे पर ख़ामोशी अपना रखी है। ध्यान रहे कि ईमान मुज़ेक ने अपनी प्रेस कान्फ्रेंस में जर्मन फ़ेडरल शासन के एक सीनियत एडवाइज़र (Jhon Wilhelm Roeig) के साथ पत्रकारों से इस नाज़ुक समस्या पर बात की और प्रामाणित किया कि सीरिया के शरणार्थी बच्चे और बच्चियां वैश्यावृत्ति और अंग व्यापार करने वाले जर्मन माफ़ियाओं के हाथों चढ़ चुके हैं। इन नन्हें बच्चों के शरीर के अंग को निकालकर यूरोपीय देशों के बीमार बच्चों को ट्रांसप्लान्ट किये जा रहे हैं। जर्मन फ़ेडरल शासन के ख़ास सलाहकार जॉन विलियम रेवरेज ने बताया कि सरकार ने एक प्रोग्राम के तहत शेल्टर्स और शरणार्थी कैम्पों में रहने वाले हज़ारों शरणार्थी परिवारों को मार्गदर्शन उपलब्ध करायें हैं कि वे अपने बच्चों की सुरक्षा को निश्चित करे वरना वैश्यावृत्ति व अंगो का व्यापार करने वाले माफ़ियाओं के हत्थे चढ़ सकते हैं। उनका कहना था कि माफ़िया के तहत काम करने वाले सहायतार्थ कार्यकर्ताओं के कर्मचारी व चिकित्सा दल के रूप में शरणार्थी कैम्पों में जाते हैं और कम उम्र के बच्चों का चुनाव करके उन्हें ले उड़ते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया और मुस्लिम संस्थाओं के अनुसार मुसलमान शरणार्थी बच्चों के अपहरण व बेचे जाने की ख़बरें जर्मनी के अतिरिक्त क्रूशिया, यूनान व डेनमार्क से भी मिली हैं। बिट्रेन के अख़बार "डेली मेल ऑन लाइन" की एक रिपोर्ट में यह बात स्वीकार की गयी है कि लाखों मुसलमान शरणार्थियों की ओर से यूरोपीय देशों की ओर किया जाने वाला पलायन के दौरान बच्चों और बच्चियों के गुम होने की व्यवस्थित और अफ़सोसनाक घटनाएं हो रही हैं जिसके बारे में यूरोपियन पॉलिसी एजेंसी "यूरोपोल" ने अपनी विस्तृत रिपोर्ट में प्रामाणित किया है कि दो साल में सीरिया और दूसरे क्षेत्रों से पलायन करके यूरोप पहंचने वाले कम से कम दस हज़ार बच्चे अपने माता–पिता से बिछड़ चुके हैं और उनका कोई अता–पता नहीं है कि वे इस समय कहां हैं? लेकिन कुछ संस्थाओं का दावा है कि जिन बच्चों को गुमशुदा घोषित किया जा रहा है उन्हें माफ़िया द्वारा यात्रा के दौरान ही ग़ायब कर दिया गया है और बच्चों को सम्भावित रूप से वैश्यावृत्ति कराने वाले माफ़ियाओं के हाथों बेच दिया गया है। जबकि यूरोपीय एजेंसी "यूरोपोल" की ओर से प्रकट किये जाने वाले ख़तरे अभी तक यूरोपीय मीडिया में जगह नहीं बना पाये थे। .....(शेष पेज 20 पर)

ग़ीबत की बीमारी

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः हज़रत अबूहुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः तुम जानते हो कि ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) क्या है? सहाबा किराम रज़ि0 ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः अपने भाई की ऐसी बात जो उसको नापसंद हो। पूछा गयाः यदि वह कमी मेरे भाई में है जो मैं कह रहा हूँ? रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः यदि उसके अन्दर वह चीज़ है तभी तो तुमने ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) की और यदि वह चीज़ नहीं है तो तुमने उस पर आरोप लगाया।

फ़ायदाः इस्लाम धर्म में उन सभी बातों से बचने की शिक्षा दी गयी है जो समाज में फूट व विभेद का कारण बनें। आपसी रंजिशों को बढ़ावा दें। ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) भी ऐसा ही एक काम है जिसके परिणाम में समाज में इस प्रकार की खाई के बढ़ने की अत्यधिक संभावना रहती है। यही कारण है कि इस्लामी शरीअत ने ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) को बड़े गुनाहों में गिना है। इसकी गन्दगी व घिनावने पन को ईमानवालों के दिलों में बिठाने के लिए इस काम को ऐसी चीज़ का नाम दिया कि एक नेक मनुष्य की इच्छा इससे सदा के लिए उचाट हो जाए। अल्लाह तआला का कथन हैः "और न एक दूसरे की पीठ पीछे बुराई करो, क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इससे तुम घिन करोगे ही।" (सूरह हुजूरातः 12) उपरोक्त हदीस के विषय से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि किसी मनुष्य का किसी के संबंध में ऐसी अप्रिय बात का कहना जो उसमें हो, ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) है। वरना साधारणतयः लोगो के मन में यह बात रहती है कि किसी व्यक्ति में मौजूद बुराई को बयान करना ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) नहीं, बल्कि वास्तविकता का वर्णन है। यह मनुष्य की एक बड़ी कमज़ोरी है कि वह किसी दूसरे व्यक्ति की अच्छाइयों पर ग़ौर न करते हुए उसकी कमियों की टोह में रहता है। हर समय यह चिन्ता सताती रहती है कि किसी तरह अपने सामने वाले को अपमानित कर दिया जाए जबकि यह काम इस्लामी शरीअत के बिल्कुल विपरीत है। हदीस शरीफ़ में किसी के ऊपर आरोप लगाना या किसी की ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) करने वाले काम को ज़िना (अवैध संबंध) से अधिक संगीन जुर्म घोषित किया गया है। क्योंकि ज़िना के बाद मनुष्य अल्लाह तआला से माफ़ी मांग सकता है। अल्लाह तआला की रहमत वाली ज़ात से उम्मीद है कि वह इसको माफ़ कर देगा। लेकिन ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) एक ऐसा काम है जिसका संबंध बन्दों के अधिकार से है। इसमें माफ़ी उसी समय होगी जब वह व्यक्ति माफ़ कर देगा जिसकी ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) की गयी है। ग़ीबत के संगीन जुर्म होने को इस बात से बख़ूबी समझा जा सकता है कि इस काम में वह व्यक्ति भी इन्दल्लाह क़ाबिले गिरफ़्त होगा जो इस सभा में सम्मिलित हो और उसने ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) सुनी हो। यद्यपि उससे वह व्यक्ति अलग है जो इस काम को करने से मना करे। अपने भाई का बचाव करे। दिल से इस काम को बुरा जाने।

ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) के बारे में इतनी कठोर शिक्षाओं के बावजूद आज दीनदार वर्ग का एक बहुत बड़ा हिस्सा भी इस गुनाह में शामिल नज़र आता है। उस पर भी यह कि इस जुर्म की अधिकता के कारण इसकी संगीनी का एहसास भी समाप्त होता जा रहा है। साधारणतयः यह कह कर दिल को तसल्ली दे दी जाती है कि, "किसी की कमी बयान करना कोई बुरी बात नहीं" जबकि हदीस में इसी बात को ग़ीबत (परोक्षनिन्दा) का नाम दिया गया है। यद्यपि किसी की कमी वहां बयान की जा सकती है जहां दीनी व शरई मस्लहत की मांग हो। यानि यदि अमुक व्यक्ति की कमी लोगो के सामने न बतायी जाए तो इस बात का ख़तरा हो कि लोगों को उससे धोखा होगा लेकिन ध्यान रहे कि यदि इसमें भी मनुष्य का अपना स्वार्थ शामिल हो जाता है तो यह काम भी शरई स्वभाव के विपरीत है। आवश्यकता इस बात की है कि इस बुराई से बचने की संभव हद तक कोशिश की जाए। ऐसी सभाओं में न जाया जाए जहां ग़ीबत हो यदि अनजाने में किसी की ग़ीबत हुई हो तो उससे माफ़ी मांगी जाए और यदि इसमें फ़ित्ने का ख़तरा हो तो उस व्यक्ति के लिए मग़फ़िरत की दुआ की जाए यही इस्लामी शरीअत की मांग है।

इस्लामोफ़ोबिया (ISLAMOPHOBIA)

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

किसी शक्तिशाली वस्तु से डरना मनुष्य की स्वाभाविक कमज़ोरी है। किन्तु यह कमज़ोरी भर्त्सना व टिप्पणी योग्य नहीं है और न ही चिन्ताजनक है। लेकिन जब यह डर हर से ज़्यादा बढ़ जाये और हृदय व मस्तिष्क को प्रभावित करने लगे और फिर इस हावी हुए डर का कोई तर्क भी न हो तो फिर यह स्थिति "फ़ोबिया" कहलाती है। पश्चिमी चिन्तक इस्लाम को एक बहुत ही शक्तिशाली, प्रभावपूर्ण और क्रान्तिकारी धर्म स्वीकार करते हैं। इसीलिए वे इस्लाम के बढ़ते फैलाव को लेकर दिमाग़ी रूप अत्यन्त भयभीत हैं और भय की ऐसी ही स्थिति को "इस्लामोफ़ोबिया" का नाम दिया जाता है।

यूरोप व अमरीका ने हमेशा से मुसलमानों को अपना राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक शत्रु समझा है। क्योंकि केवल इस्लाम ही वह धर्म है जो उन्हें प्रत्यक्ष रुप से चैलेंज करता है और पश्चिम की तुलना में यही वह विशेष धर्म है जिसके अन्दर पूरी दुनिया को अपनी छत्रछाया में लेने की योग्यता है। यही कारण है कि यूरोप में मुसलमानों की बढ़ती हुई संख्यां से पश्चिमी चिन्तक हमेशा चिन्तित रहते हैं। उन्होंने इसको फैलाव व प्रभाव को रोकने के हर संभव प्रयास भी किये लेकिन यह भी एक वास्तविकता है कि इस्लाम का जितना दुष्प्रचार किया गया इस्लाम का क्षेत्र उतना ही फैलता गया। लोगो ने इसमें रुचि ली। इसे चर्चा का विषय बनाया। इसका अध्ययन किया और फिर इस्लाम से प्रभावित होकर इस्लाम को स्वीकार कर लिया।

पश्चिम व इस्लाम के संघर्ष का इतिहास बहुत ही पुराना है। फिर भी इस संघर्ष में सलीबी जंगों के बाद और तीव्रता पैदा हो गयी, जो क्लीसा और राजनेताओं व शासकों की ओर से मुसलमानों पर थोपी गयी थी। उन युद्धों का उद्देश्य राजनीतिक व आर्थिक लाभ की प्राप्ति था जिसमें उन्होंने अपनी जनता को भी सम्मिलित किया। उसे धार्मिक रंग में यहां तक रंग दिया कि उसमें शामिल होने वाले की मुक्ति की घोषणा कर दी गयी। लेकिन मुसलमानों के ईमानी जज़्बे, चरित्र की शक्ति व सैन्य चतुराई के कारण यूरोप को लगातार पराजय का सामना करना पड़ा था।

सलीबी युद्धों ने पूरी ईसाई दुनिया को अत्यन्त भयभीत कर दिया। आकर्षण की यह स्थिति थी कि उन्होंने अरबी भाषा व अरबी हाव–भाव को पूरी तरह से अपना लिया था। लेकिन पश्चिमी चिन्तकों और नेतृत्वकर्ताओं ने उन जंगो में अपनी पराजय को बहुत ही गंभीरता से लिया। पराजित होने के कारणों व मुसलमानों की सफलता के कारणों का निरीक्षण किया और फिर अपनी युद्ध की कार्यप्रणाली को पूरी तरह से बदल कर अपनी सारी क्षमता मुसलमानों के विरुद्ध एक नये मोर्चे की स्थापना में लगा दी। जिसका केन्द्र शैक्षिक, वैचारिक, राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था पर आधारित था और जिसका उद्देश्य मुस्लिम शासको को आपस में लड़ाकर कमज़ोर करना था जिसके लिये उन्होंने हर दांव–पेच अपना रखा था। यह मानो यूरोप की उन्नति का आरम्भ बिन्दु था।

मुस्लिम राष्ट्र यूरोपीय षडयन्त्र का पूरी तरह से शिकार हुए। राजतन्त्र को दृढ़ करने के बजाए अनावश्यक समस्याओं में उलझकर आपसी झगड़ों में पड़ गये। परिणामस्वरूप गृहयुद्ध की नौबत आ गयी। फिर धीरे–धीरे उन शासनो की एकता चूर–चूर हुई और अन्त में उनका चिराग़ ही बुझ गया।

सोलहवीं सदी के बाद यूरोप ने अपनी राजनीतिक व आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर होना आरम्भ किया। पश्चिमी राष्ट्र यानि हस्पानिया, बर्तानिया, फ़्रांस, पुर्तगाल और रूस व अमरीका इत्यादि ने मुस्लिम देशों पर क़ब्ज़ा करके वहां के लोगों को अपना दास बना लिया। राष्ट्रीय सम्पत्ति को जी भर कर लूटा। विरोध करने वालों को मौत के घाट उतार दिया और बरबरता की ऐसी कार्यवाहियां की जिनके उदाहरण इतिहास में नहीं मिलते। यूरोपीय साम्राज्य का यह इतिहास पूरी मानवता पर धब्बा है।

बीसवीं सदी में पश्चिमी नवीनीकरण के अत्याचारों

से तंग आकर जनता ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। विशेषतयः उलमाओ (बुद्धिजीवियों) ने संघर्ष किया और मुसलमानों के सभ्यता व संस्कृति को सुरक्षित रखा। क्रान्तियों की उन आंधियों के सामने पश्चिमी ताक़तों के पांव उखड़ गये और उनको मुस्लिम देशों से निकलना पड़ा। लेकिन जाते–जाते अपने पीछे वे शासक वर्ग के नाम पर कठपुतलियां छोड़ गये। यह शासक देश की दौलत व सम्पत्ति पर क़ाबिज़ हो गये और स्वतन्त्रता के फल से जनता को वंचित कर दिया। अतः आम जनता शिक्षा व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये पश्चिमी देशों का रुख़ करने लगी जहां विभिन्न प्रकार के कार्यों हेतु लोगों की आवश्यकता थी। इस प्रकार बीसवीं सदी में लाखों मुसलमान फ़्रांस, बर्तानिया, अमरीका, जर्मनी, इटली, हॉलैन्ड, स्पेन, आस्ट्रिया, डेनमार्क और नार्वे इत्यादि पहुंचे और नौकरियां करते–करते वहीं के निवासी हो गये। उन लाखों मुसलमानों में से एक बहुत बड़ी संख्यां उनकी भी थी जो पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति में घिरे हुए होने के बावजूद इस्लामी मूल्यों से पूरी तरह जुड़े हुए थे और अपनी जातिगत विशेषता पर स्थापित रहे। इसके अलावा दावत व तब्लीग़ के द्वारा इस्लाम के प्रचार–प्रसार का कार्य भी आरम्भ हुआ। धीरे–धीरे मुसलमानों की संख्या में एक नुमाया वृद्धि होती गयी। व्यापार व नौकरी में भी उनका प्रतिनिधित्व महसूस किया जाने लगा। फलते–फूलते मुसलमानों को बर्दाश्त करना पश्चिम के लिये आसान बात न थी। अतः मुसलमानों के विरोध का आरम्भ हुआ। बहुत से महत्वपूर्ण देश जैसे बर्तानिया, जर्मनी और फ़्रांस इत्यादि में पश्चिमी मार्गदर्शक यह कहने लगे कि मुसलमान पलायन करके आयी हुई क़ौम है और यह लोग हमारे नवजवानों से नौकरियां छीन कर उन्हें बेरोज़गारी के दलदल में ढ़केल रहे हैं। अतः देश में उनके आने पर पाबन्दी लगायी जाये। बहुत से पश्चिमी मार्गदर्शकों ने यह एतराज़ भी किया कि मुसलमान पक्षपाती हैं और देश के प्रति वफ़ादार नहीं है क्योंकि मुसलमान हमारे मूल्यों व रस्मों को अपनाने के बजाए अपने धार्मिक रीति–रिवाज के पाबन्द हैं और समाज में अपनी अलग पहचान रखते हैं जो पश्चिमी समाज के बिल्कुल विपरीत है।

उपरोक्त कारणों के आधार पर पश्चिमी देशों में मुसलमानों को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा। उनका अपमान किया जाने लगा। उनके साथ मुजरिमों जैसा बर्ताव किया जाने लगा और विभिन्न विभागों में वे पक्षपात का निशाना बनने लगे। फिर भी सोवियत यूनियन के पतन तक मुसलमानों से दुश्मनी में इतनी कट्टरता नहीं पैदा हुई थी क्योंकि उस समय तक पूरा यूरोप कम्यूनिज़्म (साम्यवाद) से युद्ध में व्यस्त था और कम्यूनिज़्म को पराजित करने में ही उसकी सारी क्षमता लग रही थी।

सोवियत संघ की समाप्ति के बाद यूरोप ने पश्चिमी देशों में इस्लाम के बढ़ते हुए प्रभाव को अपनी धार्मिक व राजनीतिक चौधराहट के लिये ख़तरा समझा। अतः विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मोर्चे खोल दिये। मीडिया व साहित्य के द्वारा भी मुसलमानों को डराया जाने लगा। हिंसात्मक घटनाएं भी होने लगीं और फिर नाइन–इलेवेन का ड्रामा रचा गया। जिसके परिणामस्वरूप पश्चिमी क़ौमें "इस्लामोफ़ोबिया" नामक बीमारी का शिकार होती चली गयीं।

नाइन–इलेवेन के ड्रामे के बाद धार्मिक आधार पर मुसलमानों के साथ पक्षपातपूर्ण बर्ताव किया गया। पर्दे पर पाबन्दी की आवाज़ें उठने लगीं। कुरआन के नुस्ख़े जलाये गये। अन्तिम संदेष्टा रसूलुल्लाह (स0अ0) की शान में गुस्ताख़ी की गयी और फिर हिंसात्मक घटनाओं का एक सिलसिला चल पड़ा जिसमें बड़ी संख्या में बेगुनाह मारे गये। इज़्ज़ते लूटी गयीं। लोग ज़िन्दा जलाये गये। दुकान व मकान लूटे गये और पूरी दुनिया के सामने इस्लाम को एक आतंकप्रिय धर्म के रूप में प्रस्तुत किया गया। और यह सारी हैवानियत केवल इसलिये की गयी कि यूरोप व अमरीका में इस्लाम के बढ़ते हुए क़दम रुक जाएं और लोग उसका देश निकाला कर दें लेकिन.....

लेकिन इन सभी दुष्प्रचारों व हिंसात्मक कार्यवाहियों के बाद इस्लाम एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय बन गया। विशेषतया यूरोप व अमरीका की जनता के ध्यानाकर्षण

का केन्द्र बन गया। लोगो में जिज्ञासा पैदा हुई। कुछ ने वास्तविकता जानने के लिये तो कुछ ने कमियां ढूंढने के लिये इसका अध्ययन करना शुरू किया। इन्टरनेट की दुनिया में "मुहम्मद" व "इस्लाम" शब्द को सबसे ज़्यादा सर्च किया जाने लगा। कुरआन करीम की तो रिकार्ड तोड़ प्रतियां बिकीं। यूरोप व अमरीका के बाज़ारों में इस्लामी किताबों की मांग बढ़ती गयी। यूनिवर्सटियों में इस्लाम पर पीएचडी करने वालों का सिलसिला चल पड़ा। सैंकड़ो संस्थाओं ने इस्लामिक स्टडीज़ के विभाग की स्थापना की और फिर इसके अध्ययन व खोज ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया। इस्लाम की वास्तविकताओं ने उनके मस्तिष्क को प्रकाशित कर दिया। मीडिया के दुष्प्रचार की क़लई खुल गयी और एक बहुत बड़ी संख्यां में लोगो ने इस्लाम स्वीकार किया। उनमें पश्चिम के प्रतिभावान लोग भी शामिल थे। विभिन्न विभागों के माहिर भी थे और विभिन्न क्षेत्रों की महत्वपूर्ण हस्तियां भी थीं।

पिछले कुछ सालों में जिन चर्चित हस्तियों ने इस्लाम को अपनाया उनमें कुछ महत्वपूर्ण नाम यह हैं: अरब टैलेन्ट में दूसरा स्थान प्राप्त करने वाली तेइस साल की अमरीकी पॉप सिंगर जेनिफ़र ग्राव्ट, फ़िलीपाइन के चर्चित गायक फ्रेडी एगोन्कर, थाइलैन्ड में जर्मन दूत यास्मीन, फित्ना फिल्म में प्रोड्यूसर अन्नाउड फ़ान्डवर्न, बाक्सर मुहम्मद अली, यान रेडली मरियम, माहिर शिक्षाविद् प्रोफ़ेसर कार्ल मार्क्स, इंग्लैन्ड की मॉडल कार्ले वाट्स, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉक्टर विलियम्ज़, प्रचारक मुहम्मद यूसुफ़, विख्यात पॉप सिंगर माइकल जैक्सन के भाई व बहन जैसे सैंकड़ो लोग हैं जिन्होंने इस्लाम की वास्तविकता के सामने सर को झुका दिया है। इनके अतिरिक्त पॉप सिंगर माइकल जैक्सन व राजकुमारी डायना के बारे में भी खबरें थी कि उन्होंने भी इस्लाम कुबूल कर लिया है।

तमाम षड़यन्त्रों व दुष्प्रचारों के बावजूद भी इस्लाम यूरोप वासियों में सबसे प्रसिद्ध और तेज़ी से फैलने वाला धर्म है। और इस्लामोफ़ोबिया एक क्षणिक रोग है जिसका उपचार स्वयं इस्लाम धर्म में ही है।

शेष: जर्मनी में मुस्लिम शरणार्थी बच्चों के ....

लेकिन जर्मनी की राजधानी बर्लिन में जर्मन मुसलमानों की संस्था "सेन्ट्रल कौन्सिल ऑफ़ जर्मन मुस्लिम" के चेयरमैन ईमान मुज़ेक ने यूरोपीय एजेंसी की इस संभावना को प्रामाणित कर दिया है कि शरणार्थी बच्चों का अपहरण किया गया है और उनके अंग बेचे जा रहे हैं, जबकि लड़कियों को वैश्यावृत्ति कराने वाले माफ़ियाओं के हाथों बेचा जा रहा है। इधर बिट्रेन के अख़बार 'डेली मेल' की रिपोर्ट में यह स्वीकार किया गया है कि केवल जर्मनी की फ़ेडरल क्रिमिनल पुलिस ने एक रिपोर्ट में 01–जनवरी–2016 को स्वीकार किया है कि जर्मनी पहुंचने वाले शरणार्थियों के 4749 बच्चे गुम हो चुके हैं, जिनका अभी तक कोई पता नहीं चल पाया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि केवल 23 महीनों में जर्मनी में गुम होने वाले बच्चों में 431 बच्चों की आयु 13 साल से कम है और 4287 बच्चों की उम्रें 14 से 17 साल के बीच है। यहां यह भी ध्यान रहे कि सयुंक्त राष्ट्र संघ के एक कन्वेशन के अनुसार 18 साल से कम का हर नवजवान बच्चा कहलाता है और उसको बच्चों के अधिकार प्राप्त होते हैं। अख़बार के अनुसार जर्मन पुलिस के एक अफ़सर ने अपना नाम सामने न लाने की शर्त पर बताया कि 01 जुलाई 2015 तक उनके पास 1637 बच्चों के गुम होने की प्रामाणित रिपोर्टें मौजूद थीं लेकिन उनका डेटाबेस न होने के कारण उनको खोजने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है और सरकार इस बारे में कोशिश कर सकती है। इधर जर्मन मीडिया ने बताया कि मुसलमान बच्चों के शारीरिक शोषण की रोकथाम और उन्हें अपहरण से सुरक्षित रखने के लिए "सेन्ट्रल कौन्सिल ऑफ़ जर्मन मुस्लिम" के चेयरमैन ईमान मुज़ेक और जर्मन फ़ेडरल शासन के सीनियर एडवाइज़र जॉन विलियम रेवरेज मिलकर कोशिशें कर रहे हैं और उन्होंने सभी शरणार्थी कैम्पों में ऐसे पोस्टर लगाये जा रहे हैं और सभाएं आयोजित की जा रही हैं जिनमें शरणार्थियों को बच्चों की सुरक्षा के तरीक़ों पर ब्रीफ़िंग दी है।

शब–ए–बारात की दुआ और उसका तरीक़ा

बुज़ुर्गों से साबित है कि शब–ए–बारात के बाद ''सूरह यासीन'' तीन बार पढ़ते हैं:

- एक बार उम्र की अधिकता के लिए।
- दूसरी बार बलाओं को टालने के लिए।
- तीसरी बार ख़ुदा का सिवा किसी का मोहताज न होने के लिए।

हर बार सूरह यासीन के बाद निम्नलिखित दुआ एक बार पढ़ें। इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला पढ़ने वाले की ज़रूरत पूरी करेगा और साल भर सारी मुसीबतों से बचाए रखेगा।

"اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا ذَا الطَّوْلِ وَ الْإِنْعَامِ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ ظَهْرَ اللَّاجِئِيْنَ وَ جَارَ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ وَأَمَانَ الْخَائِفِيْنَ اللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِي عِنْدَكَ فِي أُمِّ الْكِتَابِ شَقِيّاً أَوْ مَحْرُوماً أَوْ مَطْرُوداً أَوْ مُقْتَراً عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ- فَامْحُ -اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَ حِرْمَانِيْ وَ طَرْدِي وَ إِقْتَارَ رِزْقِي وَ أَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِي أُمِّ الْكِتَابِ سَعِيْداً مَرْزُوقاً مُوَفَّقاً لِلْخَيْرَاتِ، فَإِنَّكَ قُلْتَ وَ قَوْلُكَ الْحَقُّ فِي كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ يَمْحُوا اللهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ وَ عِنْدَهٗ أُمُّ الْكِتَابِ، إِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّي الْأَعْظَمِ فِي لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ الَّتِي يُفْرَقُ فِيهَا كُلُّ أَمْرٍ حَكِيْمٍ وَ يُبْرَمُ أَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَالَا نَعْلَمُ وَ مَا أَنْتَ بِهٖ أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ وَ صَلَّى اللهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَ سَلَّمَ"

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE: 05 | MAY 2016 | VOLUME: 08

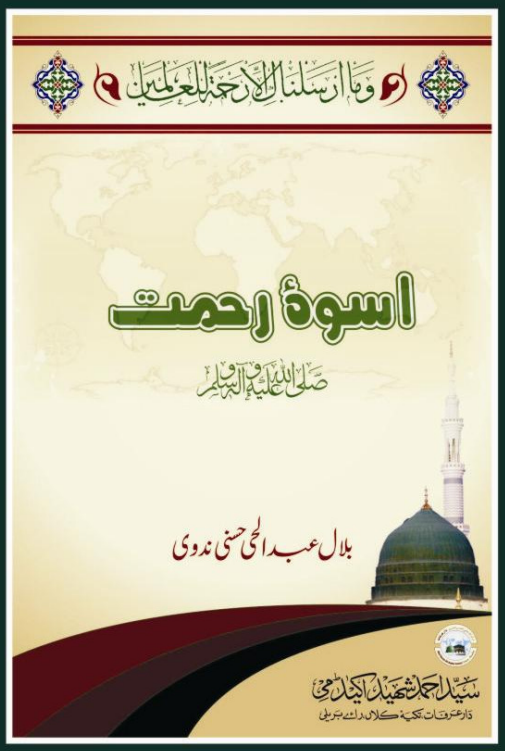

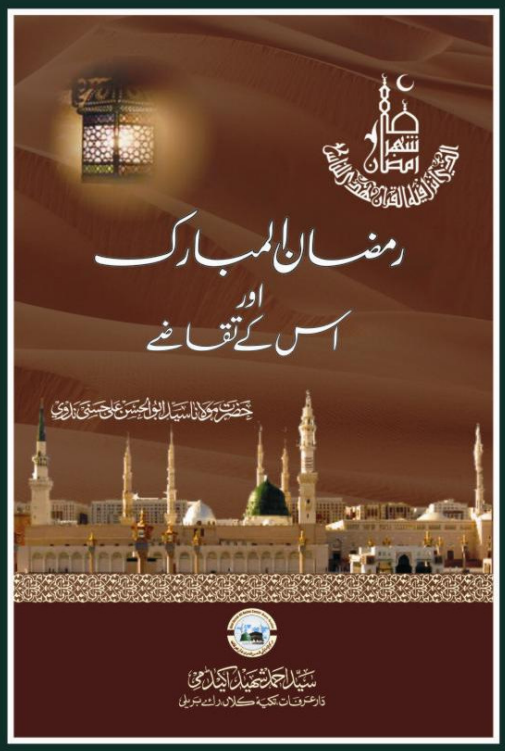

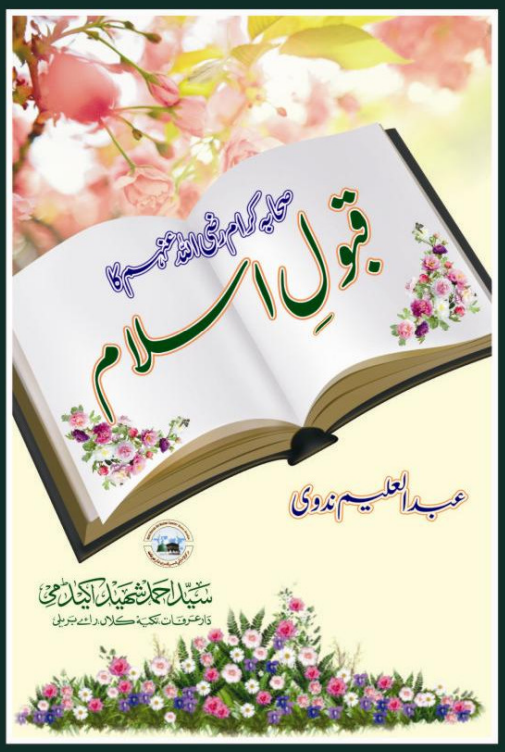

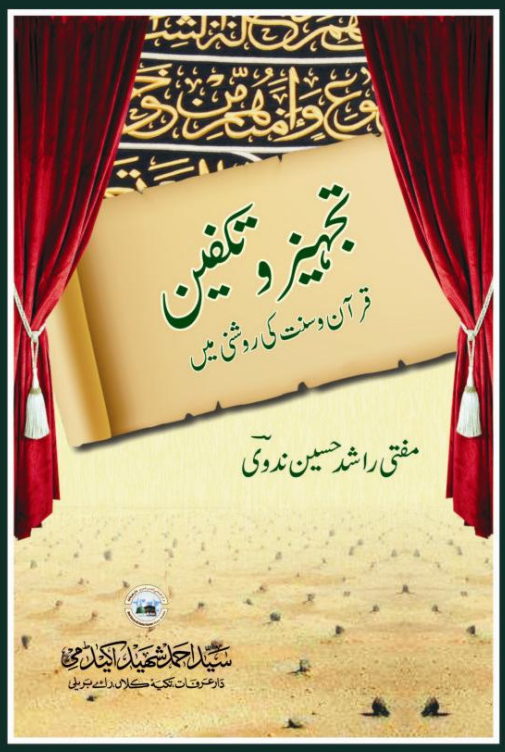

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.